Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0c
न्यूनतम तापमान: 21.0c
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

दैनिक
संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अखबार

वर्ष: 11 अंक: 78 जयपुर, गुरुवार, 22 अगस्त 2024 पृष्ठ:8 मूल्य: ‘1.50

अब होगी खुशियों की बात संजीवनी टुडे के साथ
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ एवं नियुक्ति बधाई संदेश
मात्र 1100/- में
साईज 8X8 cm
संजीवनी टुडे
e-mail: sanjeevnitoday@gmail.com

एससी आरक्षण में कोटा देने के विरोध में भारत बंद

बिहार में ट्रेनें रोकीं, पटना में लाठीचार्ज, राजस्थान के 16 जिलों में स्कूल बंद, पटना में प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज

■ संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट के एससी आरक्षण में कोटा लागू करने की इजाजत देने के खिलाफ बुधवार को दलित-आदिवासी संगठनों ने 14 घंटे का भारत बंद बुलाया। नेशनल कन्फ़ेडरेशन ऑफ दलित एंड आदिवासी ऑर्गनाइजेशन ने इसे दलित और आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों के खिलाफ बताया है। बिहार में बंद का सबसे ज्यादा असर दिख रहा है। वहीं राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में इसको लेकर अलर्ट है।

बिहार के गोपालगंज में स्कूल बस जलाने की कोशिश, अंदर 20 बच्चे थे

बिहार के गोपालगंज में प्रदर्शनकारियों ने स्कूल बस जलाने की कोशिश। बस में 20 बच्चे सवार थे। एसपी स्वर्ण प्रभात ने कहा है कि आरोपियों की पहचान कर एक-एक व्यक्ति पर नामजद एफआईआर कर कार्रवाई की जाएगी। जोधपुर के सोमेसर गांव दुकान बंद कराने के लिए प्रदर्शनकारियों ने गर्म तेल की कढ़ाई उलट दी। इस कारण हलवाई के दोनों पैर जल गए। वहीं जोधपुर शहर में रैली निकालने के दौरान बंद समर्थक ट्रैफिक पुलिस की पोस्ट पर चढ़ गए। यूपी के जालौन में प्रदर्शनकारी और पुलिसकर्मियों से भिड़ गए। सीओ को धक्का दे दिया।

पीएम क्रीमी लेयर लागू करने से मना कर चुके

9 अगस्त को प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि अनुसूचित जाति के आरक्षण में क्रीमी लेयर लागू नहीं किया जाएगा। 1 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बीआर गवई ने टिप्पणी की थी कि एससी-एसटी में भी क्रीमी लेयर लागू करने पर विचार करना चाहिए। इसे लेकर दलित सांसदों ने पीएम से मिलकर अपनी चिंता जताई थी।

रांची में सड़क पर आगजनी, बांस-बल्ली से रास्ता रोका

सुप्रीम कोर्ट के एससी आरक्षण में क्रीमीलेयर लागू करने के फैसले के खिलाफ दलित संगठनों की ओर से आज भारत बंद बुलाया गया है। भारत बंद का झारखंड की राजधानी रांची में असर दिखना शुरू हो गया है। रांची के शहरी क्षेत्र के साथ-साथ रिंग रोड के इलाके में बंद समर्थक सुबह नौ बजे से उतरे गए और सड़कों को ब्लॉक कर दिया।

पंजाब में भारत बंद बेअसर, वाल्मीकि समाज ने लड्डू बांटे

एससी आरक्षण में क्रीमी लेयर के सुप्रीम कोर्ट के सुझाव के खिलाफ भारत बंद पंजाब में बेअसर रहा। जालंधर में दलित-आदिवासी संगठन विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। वाल्मीकि समाज के नेताओं ने बंद का विरोध किया है। सुप्रीम कोर्ट का सुझाव सही बताते हुए नगर निगम सफाई यूनियन के सदस्यों ने जालंधर के कंपनी बाग चौक पर लड्डू बाटें।

बक्सर में जज की गाड़ी रोकी

बक्सर के अंबेडकर चौक के पास प्रदर्शनकारियों ने सिविल कोर्ट के अतिरिक्त जिला जज की गाड़ी को रोक दिया। हंगामा कर रहे लोग गाड़ी के आगे खड़े हो गए। पुलिसकर्मी भी मौजूद थे। वो प्रदर्शनकारियों को रास्ता देने के लिए समझाते रहे, लेकिन सभी नारेबाजी करते रहे। आखिरकार जज की गाड़ी को वापस मोड़ना पड़ा। बताया गया कि वो कोर्ट न जाकर अपने आवास वापस चले गए। आगरा में सड़क पर उतरे बसपा कार्यकर्ताओं ने जबरन दुकानें बंद करवाईं। कलेक्ट्रेट कार्यालय के गेट पर बसपा का झंडा भी फहराया। हाईवे जाम कर लोगों से बदसलूकी की। पटना के डाकबंगला चौराहे पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर पहले वाटर केनन चलाई, फिर लाठीचार्ज किया। सभी बेरिकेडिंग तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

भारत बंद से करोड़ों का नुकसान

अनुसूचित जाति आरक्षण में क्रीमीलेयर के विरोध में बुधवार को भारत बंद रहा। बंद का असर जयपुर में भी देखने को मिला। बाजारों को सुबह से ही बंद रखा गया। कहीं कहीं दुकानें खुली मिली जिन्हें भी बंद करवा दिया गया। बंद के कारण जयपुर में एक ओर जहां करोड़ों का व्यापार प्रभावित हुआ वहीं दूसरी ओर एशिया की सबसे बड़ी फल सब्जी मंडी मुहाना मंडी में भी कई क्विंटल हरी सब्जियां खराब हो गई। शहर में आए दिन बंद को देखते हुए व्यापारियों ने अपना विरोध भी जताया है। परकोटे के व्यापारियों ने पुलिस प्रशासन से आगे से शहर में रैली निकालने की परमिशन नहीं देने का आग्रह किया है।

जयपुर में बंद के दौरान निकाली रैली

अनुसूचित जाति व जनजाति आरक्षण में क्रीमीलेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ देशभर के विभिन्न संगठनों ने बुधवार को ‘भारत बंद’ रहा। राजस्थान में कांग्रेस, बसपा समेत कई पार्टियां इस बंद का समर्थन किया। जयपुर में भारत बंद का व्यापक असर देखने को मिला। शहर में बाजार बंद नजर आए। बस और टैक्सी सेवा भी बंद के दौरान बाधित रही। लो-फ्लोर और रोडवेज बसों का संचालन भी बंद रहा। जेसीटीएसएल की ओर से लो-फ्लोर बसों को नजदीकी थानों में खड़ी करने एवं आगार के पास वाली गाड़ियों को डिपो बुलाया गया। सिंधी कैंप बस स्टैंड से राजस्थान रोडवेज का संचालन सुबह 5 बजे से बंद रहा। ऐसे में जो यात्री यहां यात्रा करने के लिए पहुंचे, वे बसों का संचालन शुरू होने का इंतजार करते रहे। वहीं शहर में अलग-अलग जगह रैपिड एक्शन फोर्स को भी तैनात किया गया। भारत बंद का असर एशिया की सबसे बड़ी मंडी मुहाना में भी देखने को मिला।

आंध्रप्रदेश की फार्मा फैक्ट्री में आग, 18 की मौत

36 लोगों का इलाज जारी, सीएम नायडू घटनास्थल का दौरा करेंगे, पीड़ितों से मिलेंगे

■ संजीवनी टुडे

अनाकापल्ले। आंध्र प्रदेश के अनाकापल्ले जिले में फार्मा कंपनी में बुधवार (21 अगस्त) की दोपहर करीब 2.15 बजे आग लग गई। इस घटना में अबतक 18 लोगों की मौत हो गई है। 36 से ज्यादा लोग जख्मी हैं। सभी को एनटीआर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना अच्युतापुरम एसईजेड की फार्मा कंपनी एस्किएंटिया के प्लांट की है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि पहले कंपनी के रिएक्टर के पास आग दिखी और फिर तेज धमाका हुआ। इसका असर इतना तेज था कि बिल्डिंग के पहले फ्लोर का स्लैब भी ढह गया। लोगों ने कहा कि इस घटना में और भी लोग घायल हो सकते थे। क्योंकि फैक्ट्री में 381 से ज्यादा कर्मचारी दो शिफ्ट में काम करते हैं। जब आग लगी उस वक्त ज्यादातर कर्मचारी लंच पर गए हुए थे। वहीं, अनाकापल्ले डीएम विजयन कृष्णन ने कहा कि 13 लोगों का रेस्क्यू भी किया गया। अधिकारियों ने कहा कि जब सोल्वेंट ऑयल को पहली मंजिर से दूसरी मंजिल पर पंप किया जा रहा था, तभी उसमें लीक हुआ और आग लग गई। इसके बाद तेज विस्फोट हुआ। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। फैक्ट्री में काम करने वालों के परिवारों को घटना की जानकारी मिली तो वे यहां पहुंचे।

अपनों की तलाश करते लोगों ने आरोप लगाए कि अधिकारियों ने हमें सही जानकारी नहीं दी। साथ ही सीएम खुद आज दुर्घटना स्थल का दौरा करेंगे। वे मृतकों के परिवारों से मिलेंगे और घायलों को देखने अस्पताल भी जाएंगे। वहीं, डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने एक्स पोस्ट में घटना पर दुख जताया। कल्याण ने अधिकारियों को सुरक्षा ऑडिट करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही सुरक्षा मानकों और नियमों का सख्ती से पालन कराए जाने को कहा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अनकापल्ली हादसे पर शोक जताया। पीए मोदी ने भी घटना पर दुख जताया है। पीएमओ के मुताबिक, प्रधानमंत्री ने मृतकों के परिजनों को 2 लाख रुपए की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। घायलों को 50,000 रुपए दिए जाएंगे।

सीएम चंद्रबाबू नायडू, आज करेंगे दौरा

अनाकापल्ले की घटना पर राज्य के सीएम चंद्रबाबू नायडू ने दुख जताया। उन्होंने घटना की हाई लेवल जांच कराने के निर्देश दिए हैं। सीएम ने कहा कि अगर फैक्ट्री मैनेजमेंट की लापरवाही सामने आती है तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। सीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जरूरत पढ़े तो घायलों को दूसरे अस्पताल ले जाने के लिए एयर एम्बुलेंस का उपयोग करें। सीएम ने राज्य के स्वास्थ्य सचिव को तुरंत दुर्घटना स्थल का दौरा करने का भी निर्देश दिया।

राजस्थान में फाइटर प्लेन से गिरी बम जैसी चीज

तेज धमाके के कारण 8 फीट गहरा गड्ढा हुआ, एयरफोर्स ने जांच के आदेश दिए

■ संजीवनी टुडे

रामदेवरा (जैसलमेर)। राजस्थान में जैसलमेर के रामदेवरा इलाके में बुधवार, 21 अगस्त को एयरफोर्स के फाइटर एयरक्राफ्ट से बम जैसी चीज गिरने से तेज धमाका हुआ। पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में 8 फीट गहरा गड्ढा हो गया। घटना आबादी से दूर सुनसान इलाके में हुई। हालांकि इससे कोई जनहानि नहीं हुई है। इस घटना के बाद पुलिस अलर्ट मोड में आ गई। राठोड़ा गांव के खिंव सिंह ने बताया कि घटना बुधवार दोपहर करीब 12 बजे की है। गांव के ऊपर से बहुत कम ऊंचाई में एक एयरक्राफ्ट उड़ रहा था। इसी दौरान गांव की आबादी से करीब एक किलोमीटर दूर जोरदार धमाका हुआ। धमाके की आवाज सुनकर गांव के लोग मौके पर पहुंचे। जानकारी के मुताबिक यह यूएवी एयर क्राफ्ट मानव रहित था और बॉर्डर एरिया पर हो रही गतिविधियों पर नजर रखने का काम करता था। यह बॉर्डर एरिया में लगातार घूमता और निगरानी करता था। इससे पहले भी ये क्राफ्ट तकनीकी खामी के चलते क्रैश हो चुके हैं। जैसलमेर में करीब 5 महीने पहले तेजस फाइटर जेट क्रैश हो गया था। जैसलमेर शहर से 2 किमी दूर जवाहर नगर स्थित भील समाज के हॉस्टल पर जा गिरा।

आर्मी रेंज से 15 किमी. की दूरी की घटना

पोकरण एएसपी गोपाल सिंह भाटी ने बताया, ‘घटना की सूचना पर रामदेवरा पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने आर्मी, बीएसएफ सहित अन्य सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारियों को इसके बारे में जानकारी दी है। यह घटना पोकरण में स्थित आर्मी रेंज से 15 किलोमीटर की दूरी पर हुई। क्षेत्र के पास में ही पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

एयरफोर्स ने दिए जांच के आदेश

भारतीय वायुसेना ने एक्स पर लिखा, ‘आज पोखरण फायरिंग रेंज के पास तकनीकी खराबी के कारण भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विमान से एक एयर स्टोर अनजाने में बाहर निकल गया। इस घटना की जांच के लिए भारतीय वायुसेना द्वारा जांच के आदेश दिए गए हैं। जान-माल के किसी नुकसान की खबर नहीं है। एयर स्टोर फाइटर जेट से जुड़े बाहरी इक्विपमेंट (उपकरण) या युद्ध सामग्री को कहते हैं। युद्ध के दौरान इन्हें गिराया जा सकता है। करीब 4 महीने पहले जैसलमेर से 30 किमी दूर भारतीय वायुसेना का एक टोही विमान क्रैश हो गया था। 25 अप्रैल 2024 को सुबह करीब 10 बजे होटी विमान पिथला-जाजिया गांव के पास भोजाणियों की ढाणी के करीब गिरा था। हादसे में कोई नुकसान नहीं हुआ था। घटना की जानकारी मिलते ही जिला प्रशासन के साथ वायुसेना के अधिकारी मौके पर पहुंचे।

झारखंड के पूर्व सीएम चंपाई सोरेन नई पार्टी बनाएंगे

■ संजीवनी टुडे

कहा- रास्ते में कोई मिला तो दोस्ती करेंगे; हफ्तेभर में सब साफ हो जाएगा

रांची। झारखंड के पूर्व सीएम और उच्च शिक्षा मंत्री चंपाई सोरेन अब नई पार्टी बनाएंगे। दिल्ली से सरायकेला लौटने के 12 घंटे के बाद बुधवार, 21 अगस्त को अपने आवास पर उन्होंने इसकी घोषणा की। चंपाई ने कहा, ‘हम राजनीति से संन्यास नहीं लेने जा रहे हैं। हमने जो अध्याय शुरू किया है, उसका चैप्टर बदलता रहेगा। नए संगठन को मजबूत करेंगे। रास्ते में कोई दोस्त मिला तो दोस्ती करेंगे। चुनाव को देखते हुए नई पार्टी बनाने के लिए अब समय कम रह गया है, इस पर चंपाई बोले कि इससे आपको क्या परेशानी है। जब 3-4 दिन में 30-40 हजार कार्यकर्ता आ गए तो नई पार्टी बनाने में हमको क्या परेशानी है। 7 दिन में सब साफ हो जाएगा। रिपोर्टर के ये पूछने पर कि झारखंड सरकार में बने रहेंगे, इस पर चंपाई तल्खी दिखाते हुए बोले, ‘हमने बोल दिया ना कि नया अध्याय शुरू कर रहे हैं। नया अध्याय शुरू करेंगे तो एक जगह रहेंगे कि दुई (दो) जगह रहेंगे। जनसमर्थन ने ही हमारा हौसला बुलंद किया है। इसी से लगा कि अब आगे बढ़ो। मंत्री पद से इस्तीफा कब देंगे, इस पर चंपाई ने कहा कि उसका समय बताएंगे।‘ इसके साथ ही चंपाई सोरेन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ड्ड पर एक पोस्ट भी किया है। लिखा है- धन्यवाद झारखंड ! इस प्यार, सहयोग एवं समर्थन के लिए।पिछले साढ़े चार दशकों से आम जनता के मुद्दों को लेकर संघर्ष करता रहा हूं, और आपका आशीर्वाद, जीवन के इस नये अध्याय में मुझे सही फैसला लेने का हौसला दे रहा है। फिलहाल जनता से मिल रहा हूं। संन्यास लेना अब विकल्प नहीं है। सभी लोगों की राय के आधार पर शीघ्र ही उचित फैसला लिया जाएगा। 16 अगस्त को चंपाई सोरेने के साथ जेजेएम के विधायक समीर मोहंती, दशरथ गगराई, नीरल पूर्ती, चमरा लिंडा, रामदास सोरेन, संजीव सरदार और मंगल कालिंदी के भाजपा में शामिल होने की चर्चाएं होने लगीं। उनसे जब सवाल पूछा गया तो उन्होंने इसे अफवाह बता कर खारिज कर दिया। 18 अगस्त को चंपाई सोरेन की अचानक कोलकाता के दमदम एयरपोर्ट से दिल्ली जाने की सूचना सामने आती है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, सीबीआई आज सुप्रीम कोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट देगी

राज्य सरकार संदीप घोष पर हलफनामा पेश करेगी, मानस कुमार बंद्योपाध्याय अस्पातल के नए प्रिंसिपल

■ संजीवनी टुडे

कोलकाता/नई दिल्ली। कोलकाता रेप-मर्डर केस में 21 अगस्त को पश्चिम बंगाल सरकार ने नया एक्शन लिया। देर रात आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की नई प्रिंसिपल डॉ. सुरहिता पाल, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. बुलबुल मुखोपाध्याय और चेस्ट डिपार्टमेंट की एचओडी अरुनभा दत्ता का तबादला कर दिया गया। रेप-मर्डर केस को लेकर बीते 11 दिन से विरोध प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों ने इन सभी अधिकारियों को हटाने की मांग की थी। सरकार ने मानस कुमार बंद्योपाध्याय को नया प्रिंसिपल नियुक्त किया है। इसके अलावा राज्य सरकार ने पूर्व प्रिंसिपल डॉ. संदीप घोष के कलकत्ता नेशनल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में तबादले के आदेश को भी रद्द कर दिया है। वहीं, सीबीआई गुरुवार (22 अगस्त) को सुप्रीम कोर्ट में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस की स्टेटस रिपोर्ट पेश करेगी। कोर्ट को बताएगी की 9 दिन की जांच में अब तक क्या जानकारी मिली है। कलकत्ता हाईकोर्ट ने 13 अगस्त को ये केस सीबीआई को सौंपा था। इधर, मेडिकल कॉलेज के पूर्व उपाधीक्षक अख्तर अली ने हाईकोर्ट से पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष के खिलाफ क्कजांच की मांग की है।

2 असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर समेत 3 अधिकारी

दोपहर में सरकार ने 2 असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर समेत 3 अधिकारियों को सस्पेंड किया। 15 अगस्त को देर रात आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हजारों की भीड़ ने तोड़फोड़ की थी। ये कार्रवाई उसी मामले में की गई। उनका आरोप है कि घोष के कार्यकाल में कई वित्तीय गड़बड़ी हुईं। इस मामले में राज्य सरकार आज सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा देगी। इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश के बाद कॉलेज की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपी। 150 से ज्यादा जवान अस्पताल की सुरक्षा में तैनात हैं। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने 21 अगस्त को ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता से मुलाकात की। पीड़ित परिवार को देखकर वे भी भावुक हो गए। बोस ने कहा, ‘मैंने माता-पिता दोनों की बात सुनी है। मैं बंद लिफाफ़े में मुख्यमंत्री को पत्र लिखूंगा। उन्होंने मुझे कुछ बातें बताई हैं, जो अभी गोपनीय हैं। रेप-मर्डर केस में 21 अगस्त को कलकत्ता हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि राज्य सरकार ने पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष की जांच के लिए एसआईटी बनाई है। यह उन्हें बचाने के लिए एक दिखावा है। हालांकि कोर्ट ने कहा, हम इस मामले को अब 4 सितंबर को सुनेंगे। उधर बंगाल सरकार ने मामले से जुड़ी रिपोर्ट कोर्ट में पेश करने की बात कही। इस पर हाईकोर्ट चीफ जस्टिस टीएस शिवगनम ने कहा, मामला अब सुप्रीम कोर्ट में है। रिपोर्ट अपने पास रखिए इसे सुप्रीम कोर्ट में दिखाइए। हाईकोर्ट में पिछली सुनवाई 16 अगस्त को हुई थी। तब चीफ जस्टिस टीएस शिवगनम ने राज्य सरकार और पुलिस को फटकार लगाते हुए कहा था कि अस्पताल में तोड़फोड़ के लिए 7 हजार की भीड़ आई थी। पुलिस क्या कर रही थी? पुलिस खुद को नहीं बचा पा रही, तो डॉक्टर निडर होकर कैसे काम करेंगे।

केंद्र सरकार ने शरद पवार को जेड+ सिक्योरिटी दी

राज्य में आरक्षण को लेकर विरोध प्रदर्शन के बीच सुरक्षा बढ़ाई गई

■ संजीवनी टुडे

मुंबई। केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण विरोधी प्रदर्शनों को देखते हुए एनसीपी प्रमुख शरद पवार की सुरक्षा में इजाफा किया है। केंद्र ने उन्हें जेड+ सिक्योरिटी दी है। पवार को पहले से ही राज्य सरकार की जेड+ सुरक्षा मिली हुई है। केंद्र के फैसले के बाद दस अतिरिक्त सीआरपीएफ जवान उनकी सुरक्षा में तैनात किए जाएंगे। राज्य में आरक्षण संबंधी प्रदर्शनों के अलावा कई अन्य मुद्दों को लेकर बने हालात को देखते हुए खुफिया एजेंसियों ने उनकी सुरक्षा को लेकर अलर्ट जारी किया था। इसके बाद उनकी सुरक्षा बढ़ाई गई है। देश के सम्मानित लोगों और नेताओं को जान का खतरा होने पर उन्हें जेड+ सिक्योरिटी दी जाती है। ये सुरक्षा मिनिस्टर्स को मिलने वाली सिक्योरिटी से अलग होती है। पहले सरकार को इसके लिए एप्लिकेशन देनी होती है, जिसके बाद सरकार खुफिया एजेंसीज के जरिए खतरे का अंदाजा लगाती हैं। खतरे की बात कंफर्म होने पर सुरक्षा दी जाती है। होम सेक्रेटरी, डायरेक्टर जनरल और चीफ सेक्रेटरी की कमेटी ये तय करती है कि संबंधित लोगों को किस कैटेगरी में सिक्योरिटी दी जाए। मराठा आरक्षण को लेकर आंदोलन की अगुआई करने वाले मनोज जरांगे पाटिल ने पिछले साल जुलाई में जालना के अंतरवाली सराती में अनशन किया था। इसके बाद महाराष्ट्र एख्र एकनाथ शिंदे की अध्यक्षता में 1 नवंबर 2023 को सर्वदलीय बैठक में सभी दलों ने सहमति जताई कि मराठा समुदाय को आरक्षण मिलना ही चाहिए। इस बैठक में शरद पवार समेत 32 पार्टियों के नेता शामिल हुए थे।

हरियाणा के जेजेपी विधायक कांग्रेस में शामिल

समर्थकों संग दिल्ली गए थे, 3 दिन में दुष्यंत के 10 में से 5 एमएलए पार्टी छोड़ चुके

■ संजीवनी टुडे

चंडीगढ़। हरियाणा के पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला को लगातार झटके मिल रहे हैं। अब उनकी पार्टी जेजेपी के विधायक रामकरण काला उन्हें झटका दिया है। उन्होंने अपने समर्थकों के साथ दिल्ली में कांग्रेस की सदस्यता ले ली है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष उदय भान और पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा की अध्यक्षता में वह कांग्रेस में शामिल हुए हैं। कांग्रेस में शामिल होने के बाद रामकरण ने कहा, ‘आज मैंने नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र हुड्डा, हरियाणा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष उदयभान और सांसद दीपेंद्र हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस का दामन थामा है। जनता की आवाज सुनकर मैंने यह कदम उठाया है। कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़ने को लेकर उन्होंने कहा कि कांग्रेस चाहेगी तो वह जरूर चुनाव लड़ेंगे। जनता हरियाणा में कांग्रेस की सरकार बनवाने जा रही है। वहीं, दिल्ली रवाना होने से पहले काला ने कहा कि उन्होंने अपने कार्यकाल में कई विकास कार्य किए हैं। जो अधूरे हैं, या जिन पर काम चल रहा है, उन्हें पूरा करने के लिए वह कृतसंकल्प हैं।

जेजेपी के 5 विधायक छोड़ चुके पार्टी

इधर, पूर्व श्रम मंत्री अनूप धानक के इस्तीफ़े के बाद शनिवार 17 अगस्त को 4 और विधायकों ने पार्टी छोड़ दी। इनमें शाहबाद सीट से विधायक रामकरण काला, गुहला चीका सीट से विधायक ईश्वर सिंह, जोगीराम सिहाग और टोहाना सीट से विधायक देवेंद्र बबली शामिल हैं। चौटाला को लिखे पत्र में विधायक ईश्वर और रामकरण ने अपने इस्तीफ़े के लिए निजी कारणों का हवाला दिया है। इस तरह जेजेपी के 5 विधायक पार्टी छोड़ चुके हैं। इनमें रामकरण, ईश्वर और देवेंद्र कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं। वहीं, अनूप धानक भाजपा में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इन अटकलों पर उनका बयान अभी तक सामने नहीं आया है। उनके दोनों बेटे पहले ही कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। दूसरी ओर सूत्रों ने दावा किया है कि विधानसभा चुनाव से पहले जेजेपी को बड़ा झटका लगने जा रहा है। जेजेपी के 4 विधायक इस्तीफा देने जा रहे हैं। इनमें जोगी राम सिहाग, अनूप धानक, रामनिवास सुरजाखेड़ा और रामकुमार गौतम के नाम शामिल हैं।

खबरें फटाफट

रवनीत सिंह बिट्टू ने राज्यसभा के लिए भरा नामांकन, मुख्यमंत्री बने प्रस्तावक

संजीवनी टुडे

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मौजूदगी में भाजपा उम्मीदवार रवनीत सिंह बिट्टू ने राज्यसभा उपचुनाव के लिए बुधवार को राजस्थान विधानसभा में नामांकन पत्र दाखिल किया। मुख्यमंत्री शर्मा, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी और डॉ. प्रेम चन्द बैरवा बिट्टू के प्रस्तावक बने। साथ ही, विधि मंत्री जोगाराम पटेल, पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत तथा मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग सहित कई मंत्रिगण भी प्रस्तावक बने। इस अवसर पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ सहित बड़ी संख्या में विधायकगण मौजूद थे। मुख्यमंत्री ने बिट्टू को नामांकन पत्र दाखिल करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इससे पहले शर्मा ने आयोजित बैठक में विधायकों को संबोधित भी किया। उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री बिट्टू प्रदेश की एक रिक्त राज्यसभा सीट के लिए भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी है।

जियो 2.72 करोड़ ग्राहकों के साथ राजस्थान में सबसे आगे, जून में 2.19 लाख नए उपभोक्ता जोड़े

संजीवनी टुडे

जयपुर। रिलायंस जियो ने राजस्थान में 30 जून, 2024 तक 2.72 करोड़ मोबाइल ग्राहकों के साथ अपनी शीर्ष स्थिति बरकरार रखी है। ट्राई की रिपोर्ट के अनुसार, जून में जियो ने 2.19 लाख नए उपभोक्ता जोड़े और अन्य दूरसंचार ऑपरेटरों से बेहतर प्रदर्शन किया। राजस्थान का कुल वायरलेस सेवा का ग्राहक आधार 30 जून, 2024 तक बढ़कर 6.68 करोड़ पहुंच गया है और इस महीने में कुल ग्राहक आधार में 2.71 लाख की वृद्धि हुई है। ट्राई की रिपोर्ट अनुसार, जियो राजस्थान में 2.72 करोड़ ग्राहकों के साथ शीर्ष पर है।

काली मोरी आरयूबी के लिए स्वीकृत कराए अतिरिक्त 147 लाख रूपये

संजीवनी टुडे

अलवर। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री संजय शर्मा ने बताया कि अलवर शहर में कालीमोरी फाटक पर आरयूबी के निर्माण हेतु पूर्व में 3 करोड रूपये की राशि स्वीकृत की गई थी। कार्य प्रारंभ होने के पश्चात रेलवे, पीडबल्यूडी एवं विद्युत विभाग द्वारा निर्माण कार्य हेतु 147 लाख रूपये की अतिरिक्त राशि की मांग की गई थी जिसकी वितीय स्वीकृति सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा कराई गई है। अब कालीमोरी आरयूबी 4.47 करोड रूपये की राशि से तैयार होगा। उन्होंने अतिरिक्त राशि की स्वीकृति जारी करने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री दीया कुमारी का आभार जताया है।

पार्किंग से बाइक चुराने वाला गिरफ्तार, तीन बाइक बरामद

संजीवनी टुडे

उदयपर।सवीना थाना पुलिस ने गीतांजलि हॉस्पिटल की पार्किंग से बाइक चुराने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया। इससे चोरी की 3 बाइकें बरामद की। पुलिस के अनुसार राजसमंद निवासी आशीष यादव ने गत 16 अगस्त को रिपोर्ट दी। बताया कि गत 9 अगस्त को दोपहर 2 बजे उन्होंने गीतांजलि हॉस्पिटल की पार्किंग में बाइक रखी थी। कुछ देर बाद लौटे तो बाइक नहीं मिली। पुलिस ने जांच कर दर्शनपुरा, कुम्हारों का भट्टा निवासी यशस्वी दवे को बाइक समेत गिरफ्तार किया। इसकी निशानदेही से पुलिस ने चोरी की दो बाइकें भी बरामद की। आरोपी हॉस्पिटल और कॉलेजों की पार्किंगों की रेकी करता है। फिर मास्टर चाबी से इन्हें चुराकर भाग जाता। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है।

बकाया पैसे लेने गया युवक, महिला ने पीटा

संजीवनी टुडे

उदयपुर।सुखेर थाना क्षेत्र में बकाया पैसे लेने गए युवक पर महिला ने लोहे के पाइप से हमला कर दिया। पुलिस के अनुसार डागलियों की मगरी निवासी अंकित कुमावत ने रिपोर्ट दी कि वह मीरा पेट्रोल पंप के सामने रहने वाली परिचित अनुराधा कुमावत से 2 लाख रुपए मांगते हैं। अनुराधा ने 20 अगस्त को पैसे लेने के लिए बुलाया। वह घर पहुंचे तो महिला ने गाली-गलौज की। वह जाने लगे तो लोहे के पाइप से हमला कर दिया। पुलिस जांच कर रही है।

उच्चतम न्यायालय के फैसले के विरुद्ध एससी/एसटी समाज द्वारा शांतिपूर्ण रहा भारत बंद

संजीवनी टुडे

जयपुर। उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में उपवर्गीकरण हेतु पारित फैसले से प्रदेश का अनुसूचित जाति, जनजाति समाज आक्रोशित है जिसके कारण सोशल मीडिया पर 21 अगस्त 2024 को भारत बंद का आह्वान वायरल हो जाने पर अनुसूचित जाति-जनजाति संयुक्त संघर्ष समिति, राजस्थान द्वारा जयपुर में शांतिपूर्ण रूप से भारत बंद सम्पन्न कराया गया। बंद के समर्थन में जयपुर में मुख्य रूप से एक सद्भावना मार्च का प्रारम्भ अल्बर्ट हॉल, रामनिवास बाग से होते हुए चौड़ा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, बड़ी चौपड़, जोहरी बाजार, सांगानेरी गेट, ख्रक्र रोड होते हुए पुनः रामनिवास बाग में विसर्जित की गयी। इसके पश्चात अनुसूचित जाति-जनजाति संयुक्त संघर्ष समिति, राजस्थान के प्रतिनिधि मण्डल ने मांगो के विषय में जिला कलेक्टर को अपना ज्ञापन दिया जिसमे मुख्यतः अनुसूचित जाति-जनजाति के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए अनुसूचित जाति, जनजाति आरक्षण अधिनियम पारित करने उच्चतम व उच्च न्यायालय की सेवा नियमों में संशोधन करते हुए भारतीय न्यायिक सेवा

का गठन करके आरक्षण लागू करने, लैटरल एंट्री समाप्त कर उच्च सेवाओं में भर्ती संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से करवाने, राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर जनसंख्या में बढ़ोतरी के अनुपात में इन वर्गों की आरक्षण की सीमा बढ़ाई जाने, आरक्षण की व्यवस्था पूना पैक्ट के अनुक्रम में संविधान में दी गई है जिसकी मूल भावना पिछडापन के साथ-साथ छुआछूत है। आरक्षण का प्रावधान करने के बावजूद भी इन वर्गों के साथ पूर्ववत व्यवहार किया जा रहा है, इसलिए क्रीमी लेयर लागू नहीं की जाने, अनुसूचित जाति, जनजाति में उप वर्गीकरण इन वर्गों की एकजुटता को तोड़ने का असंवैधानिक निर्णय है जिसे अध्यादेश लाकर रद्द करने तथा भारत सरकार द्वारा उच्चतम न्यायालय में इस निर्णय के विरुद्ध रिव्यू/क्यूरेटिव पिटीशन लगाई जाने के सम्बन्ध में ज्ञापन दिया गया है।

भारत बंद के दौरान सभी बाजारों को बंद रखने के लिए समस्त व्यापारिक संगठनों,कर्मचारी संगठनों, सामाजिक संगठनों, प्रशासन एवं नागरिकों ने अपना भरपूर में सहयोग दिया जिसका समिति धन्यवाद ज्ञापित करती है। समिति के प्रतिनिधि मंडल में संयोजक जे.पी विमल आईएएस से.नि., जसवन्त सम्पतराम आईपीएस से.नि., आर.पी.सिंह आईपीएस से.नि., अनिल कुमार गोठवाल, बी.एल.भाटी, ओटाराम, प्रशांत मेहरड़ा, एच.आर.परमार, जगदीश पावटा, पी.एन.बुटोलिया, एम.एल. बारुपाल, आशाराम मीणा, जी.एल.वर्मा, रघुवीर मीणा, हरसहाय मीना, एडवोकेट हितेश राही, एडवोकेट राजेश मीणा,ईरा बोस, राज टेपन आदि उपस्थित रहे।

पुलिस ने पीटकर युवक का दांत तोड़ा

संजीवनी टुडे

उदयपुर। झाड़ोल थाना क्षेत्र के सुल्तानजी का खेरवाड़ा में 19 अगस्त की रात 3 बजे एक युवक को उसके घर पर पीटते पुलिसकर्मियों का वीडियो बुधवार को नेटबंदी हटने के बाद वायरल हुआ। इसमें दो वर्दीधारी जवानों के अलावा सादा कपड़ों में दो अन्य दिखाई दे रहे हैं, जो एक युवक के बाल पकड़कर कभी उसे पीटते तो कभी घसीटते दिख रहे हैं। आरोप है कि इस मारपीट में युवक का दांत टूट गया। उसे बचाने आई पमी के साथ भी पुलिसकर्मी धक्का-मुक्की करते दिख रहे हैं। पति के साथ महिला भी जमीन पर घसीटती जा रही है। युवक की कमर व निचले हिस्से पर चोट दिख रही है। दूसरी ओर पुलिस का कहना है कि युवक नशे में मां और परिवारों को परेशान कर रहा था। युवक उत्पात मचा रहा थाः झाड़ोल थानाधिकारी रतनसिंह चौहान ने बताया कि आरोपी जयसिंह उसके घर पर शराब के नशे में उत्पात मचा रहा था। इसकी सूचना उसकी मां कंचन कुंवर ने पुलिस कंट्रोल रूम को दी थी।

एससी एसटी कोटे में वर्गीकरण दलित और आदिवासी समाज पर हमला किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं होगा: जूली

संजीवनी टुडे

अलवर। नेता प्रतिपक्ष एवं दलित नेता टीकाराम जूली ने देश और प्रदेश के व्यापारियों का भारत बंद के दौरान मिले समर्थन पर आभार जताते हुए कहा कि एससी एसटी कोटे में वर्गीकरण दलित और आदिवासी समाज की आजादी पर हमला किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह एक तरीके से संविधान पर हमला है उनके अधिकारो को छीनने और आपस में लड़ाने की सुनियोजित योजना है। उन्होंने कहा कि आरक्षण को खत्म करने के लिए किया जा रहा यह कुंठित प्रयास किसी भी सूरत में सफल नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह कोई राजनीतिक बंद नहीं है बल्कि समाज की भावनाओं से खिलवाड़ के खिलाफ सामूहिक रूप से प्रदर्शन है इसमें कोई राजनीति होनी भी नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा आरक्षण के खिलाफ है

इनकी दलित और आदिवासी के खिलाफ षड्यंत्र को लेकर कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता आरक्षण बचाओ लड़ाई के साथ कंधे से कंधे मिलाकर खड़ा है। उन्होंने कहा कि संविधान को कमजोर कर आरक्षण पर कुठाराघात करना इस सरकार की मंशा को जाहिर करता है।

समर्पित कार्यकर्ताओं की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी: सुशील सरावगी

संजीवनी टुडे

जयपुर। कार्यकर्ता पार्टी की रीढ की हड्डी होती है, भाजपा के प्रति सेवाभावी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए इसी मिशन के साथ देश को हिंदू राष्ट्र घोषित करवाना हमारी प्राथमिकता है । नई दिल्ली से आकर डॉक्टर श्यामा प्रसाद प्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष भाई सुशील कुमार सरावगी ने जयपुर के एक होटल में आयोजित राष्ट्रीय मैराथन बैठक की प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी देते हुए कहा कि हम देश के विकास के प्रति समर्पित कार्यकर्ताओं के हितों की रक्षा के लिए समर्पित हैं । आज हमारे प्रधानमंत्री को विश्व में सम्मानित नजरों से देखा जाता है, हम उनके नेतृत्व में विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं । एक प्रश्न का जवाब देते हुए उन्होंने बढ़ते अपराधों को रोकने के लिए कठोर कानून की आवश्यकता पर बल दिया ।

मंच की राष्ट्रीय एडवाइजरी कमेटी के सदस्य समाजसेवी एडवोकेट राजेन्द्र मोदी ने कहा कि देश की आजादी के दिन से आज तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने एक सजग प्रहरी के रूप में काम किया है । देश के विकास में इसके अविस्मरणीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । भाजपा अपने 10 साल के शासन द्वारा विपक्ष को यह एहसास कराने में कामयाब रही कि अब हिंदुओं की उपेक्षा करना उनको भारी पड़ेगा। प्रेस कॉन्फ्रेंस में मंच के राष्ट्रीय महामंत्री (प्रशाशन) राहुल गोयल ने एकता का पाठ पढ़ाते हुए बांग्लादेश का उल्लेख किया कि यदि अब भी हमारे अंदर जागृति नहीं आती है तो हमारी आने वाली पीढ़ियों को आज के बांग्ला देश जैसे परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा । मंच से उपस्थित पत्रकारों का सम्मान किया गया तथा सुशील कुमार सरावगी को माल्यार्पण करते हुए राजस्थानी साफा पहनाकर व तलवार भेंट कर राहुल गोयल व वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र मोदी ने सम्मानित किया।

अलवर में बंद पूरी तरह सफल रहा, दिन भर बंद रही चाय की दुकान तक

संजीवनी टुडे

अलवर। अनुसूचित जाति-जनजाति के आरक्षण में क्रीमीलेयर पर सुप्रीम कार्ट के फैसले के विरोध का अलवर में भी बंद का असर देखने को मिल रहा है। बाजार पूरी तरह से बंद रहे। इस दिन स्कूल और कॉलेज भी नहीं खुले। रोडवेज बस नहीं चलने से सवारी परेशान होती रही। अलवर शहर के मालवीय नगर से मीणा समाज के लोग बाइक पर निकले जय भीम के नारे लगाते हुए बाइक रैली के रूप में मालवीय नगर जगन्नाथजी मंदिर से निकले, जो बाजारों में होते हुए गई और कुछ खुली दुकानों को बंद करवाया गया। अलवर केंद्रीय बस स्टैंड पर सभी रोडवेज बसें बंद रही। एक भी बस का संचालन सुबह से नहीं हुआ। हरियाणा रोडवेज बसें भी नहीं आ रही। जिसके कारण यात्रियों को परेशानी रही। एससी समाज के लोग अंबेडकर सर्किल पर पहुंचे और नारेबाजी करते रहे। अलवर रेलवे जंक्शन पर पुलिस तैनात रही। आस-पास के ट्रैक पर भी पूरी नजर रखी। कचौरी-समोसे की दुकान के साथ पूरा बाजार बंद अलवर शहर में सबसे पहले कचौरी-समोसे की दुकानें खुलती हैं, जो पूरी तरह से बंद रही। दिन में एक भी दुकान नजर नहीं आई। जहां रोजाना लोग कचौरी खाते नजर आते थे। वे दुकानें नहीं खुली। बाजारों में पूरी तरह सन्नाटा रहा। कई जगहों पर सवारी बसों के इंतजार में थे लेकिन रोडवेज बसें नहीं आई।

भारत बंद के तहत निकाली रैली, शांतिपूर्ण रहे बाजार बंद

संजीवनी टुडे

रैणी(अलवर)। बुधवार को रैणी कस्बे सहित माचाड़ी, गढी सवाईराम, झालाटाला, खेड़ा मंगलसिंह,बहडको,कानेटी सहित दर्जनों गांवों के एसटी/ एससी समाज के लोगो द्वारा सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दिए फैसले के विरोध में प्रस्तावित भारत बंद के तहत रैणी कस्बे सहित आसपास के इलाके पुरी तरह बंद रहे। भारत बंद में राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ विधायक मांगेलाल मीणा भी उपस्थित हुए और बंद का समर्थन किया और जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि संघटन में ही शक्ति है। आप लोग संघटित रहे और शांति पूर्ण ज्ञापन दे। हम अपना हक मांग रहे है किसी का हक छीन नहीं रहे। उन्होंने आरक्षण के वर्गीकरण को लेकर फैसले के विरोध में जम कर प्रहार किए। सभी ने कस्बे के मुख्य बाजार से रैली निकाल कर रैणी पहुंचे और रैणी एसडीएम नवनीत कुमार को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन लिख कर सौपा। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि धर्मचंद बैरवा, प्रहलाद मीना, मोहन सिंह बागड़ी सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे। एहतियात के तौर पर रैणी थाना अधिकारी प्रेम लता वर्मा, गढ़ीसवाईराम चौकी इंचार्ज बाबूलाल मीना मय जाप्ता मौजूद रहे। व्यापारियों ने शांति पूर्ण बाजार बंद रखे। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भारत बंद का असर पूर्णता दिखाई नहीं दिया। बहुत सी जगह बाजार खुले दिखाई दिए लेकिन कानून व्यवस्था का पूर्णतया असर रहा। पुलिस प्रशासन सुबह से शाम तक गस्त पर रहे। पुलिस प्रशासन ने कानून व्यवस्था बनाए रखी।

एसटी, एससी आरक्षण को लेकर चाकसू में विरोध -प्रदर्शन हुआ

संजीवनी टुडे

आरक्षण समर्थकों ने निकाली रैली, समर्थकों ने दुकानें बंद करवाई गई

चाकसू। यहां विधानसभा क्षेत्र में बुधवार को एससी , एसटी आरक्षण को लेकर भारत बंद के आह्वान पर चाकसू कस्बे में मिला जुला असर देखने को मिला और वही कस्बे में एससी-एसटी वर्ग के लोगों द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया और वही आरक्षण समर्थकों ने कस्बे में रेली निकाली और बाजार बंद करवाए वहीं इस दौरान समर्थको और दुकानदारों में भी हल्की-हल्की झड़प भी हुई? है । और बाद में समझाइश पर मामला शांत हुआ वहीं हालांकि कस्बे में अधिकांश दुकानें बंद रही लेकिन कुछ स्थानों पर दुकानें खुली भी रही? है । क्षेत्र में कई विद्यालय भी खुली रही और कस्बे के अंबेडकर सर्कल से शुरू हुई रैली कस्बे के मुख्य बाजार, तहसील चौराहा, सब्जी मंडी, फुले सर्कल होते हुए दुबारा अम्बेडकर सर्कल पहुंची और यहां पर एक सभा का आयोजन किया गया। सभा को कई वक्ताओं ने संबोधित किया इस दौरान नगर पालिका चेयरमैन कमलेश बैरवा, ब्लॉक अध्यक्ष भरतलाल मीणा, पूर्व अध्यक्ष गंगाराम मीणा, जुगकिशोर बौद्ध, विशन पाल मीना समेत एससी , एसटी वर्ग के बड़ी संख्या में लोग रहे मौजूद रहे हैं। और वही चाकसू उपखंड अधिकारी को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा गया है । वहीं विधानसभा सभा क्षेत्र में शांतिपूर्ण बाजार पूर्णतया बंद रहा है ।

मालपुरा में बंद का असर दिखा मिला जुला, रैली के बाद खुली दुकानें, सौंपा राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन

संजीवनी टुडे

एससी एसटी संगठनों ने निकाली रैली

मालपुरा (टोंक)। एससी एसटी संगठनों के द्वारा भारत बंद के आह्वान पर बुधवार को कस्बे के गांधी पार्क में अम्बेडकर विचार मंच के नेतृत्व में सभी एससी एसटी संगठनों के लोग एकत्रित होकर सभा का आयोजन किया। सभा को कई वक्ताओं ने संबोधित करते हुए बताया कि हजारों वर्षों से अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्गों के साथ हुए भेदभाव, छुआछूत, अमानवीय व्यवहार, बेगार एवं अत्याचार की वजह से अत्यधिक पिछड़ने के कारण इन वर्गों को सामाजिक मुख्य धारा में लाने के लिए भारत के संविधान निर्माता ने संविधान में अनुच्छेद 12, 14, 15, 16, 17, 46, 330, 335, 341 एवं 342 इत्यादि का प्रावधान कर इन वर्गों को राज्य की सेवा में तथा शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण का अधिकार दिया है। लेकिन इन अधिकारों को समय-समय पर उच्च न्यायालय के माध्यम से निष्प्रभावी करने की कोशिश की गई। जिसका नवीनतम उदाहरण माननीय उच्च न्यायालय की संविधान पीठ द्वारा 1 अगस्त को दिया गया निर्णय

है। इसके द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के संवैधानिक प्रावधानों में हस्तक्षेप किया गया है। जिसका एससी एसटी संगठनों द्वारा घोर विरोध को लेकर कस्बा बंद करवाकर जय भीम के नारे व तख्तियों के साथ विशाल रैली मुख्य बाजार से होते हुए उपखण्ड कार्यालय पहुंचकर अतिरिक्त जिला कलेक्टर को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया। बंद को लेकर पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए। किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए जगह जगह पुलिस जाप्ता तैनात किया गया। रैली में अम्बेडकर विचार मंच अध्यक्ष गजेंद्र बोहरा, गोविंद फुलवरिया, रविराय परसोया, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष रामदेव बैरवा, कैलाश बैरवा, नोरत मल वर्मा, सुरेश वर्मा, देवराज ठागरिया, महावीर नामा, छोगालाल गुर्जर, लोकेश लोदी, जितेंद्र, रामलाल फौजी, भागचंद बैरवा सहित एससी एसटी संगठनों के सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

वहीं मालपुरा शहर में भारत बंद का असर मिला जुला दिखाई दिया। एससी एसटी के कई संगठनों के द्वारा न्यायालय के फैसले का समर्थन करते हुए अपने आपको भारत बंद से दूर रखा। वहीं पार्षद प्रतिनिधि लक्ष्मण रैगर (पेंटर) ने अपनी दुकान खुली रखकर न्यायालय के फैसले का समर्थन किया। वाल्मीकि समाज सहित अन्य कुछ एससी समुदाय के लोगों ने भी न्यायालय के फैसले का समर्थन करते हुए भारत बंद का विरोध किया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के भारत बंद पर राजगढ़ कस्बे के बाजार रहे बंद

संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। बुधवार को भारत बन्द के दौरान कस्बे के बाजार पुरी तरह बंद रहे। नवीन बस स्टैंड स्थित अंबेडकर सर्किल से अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों ने अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर रैली नवीन बस स्टैंड से प्रारंभ हुई जो कस्बे के माचाड़ी रोड होते हुए गणेश पोल पहुंची। जहां से रैली मुख्य बाजार होते हुए उपखंड कार्यालय पहुंची। इस दौरान रैली में शामिल लोगों ने एससी एसटी कोटे में वर्गीकरण के खिलाफ नारेबाजी करते हुए मोदी सरकार के खिलाफ नारे लगाए। उपखंड कार्यालय में राज्यपाल के नाम एसडीएम सीमा खेतान को ज्ञापन सौपा गया। इस दौरान भारत बंद आंदोलन में संघर्ष समिति के अध्यक्ष गोकुल राम मीना, समिति के संयोजक बनवारी लाल मीना, विधायक मांगेलाल मीणा, अलेई सरपंच राजेश मीना, पाटन सरपंच सरोज मीना, भजेड़ा सरपंच सीमा मीना, रामकिशन

आदूका, एन.एल.वर्मा, नंदलाल बैरवा, प्रेम प्रकाश,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष तुलसीराम चेयरवाल, अमर सिंह वर्मा, राजेंद्र वर्मा, रामेश्वर दयाल मीना, महेंद्र वर्मा, गुलाबचंद सहित काफी संख्या में एसटी/एससी समुदाय के लोग रैली में मौजूद रहे। एससी/एसटी समाज के भारत बंद के दौरान पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रही। पुलिस उपाधीक्षक मनीषा मीना व थानाधिकारी रामजीलाल मीना रैली के दौरान पुलिस जाप्ते के साथ मौजूद रहे। वहीं प्रशासन ने ड्रोन के माध्यम से सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी की। इस दौरान कस्बे सहित आसपास के क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त जाप्ता तैनात किया गया।

कर्ज चुकाने के लिए परिचित के नाबालिक बच्चा का किया किडनैप

9 घंटे बाद में पुलिस ने नाबालिक को ढूंढ निकाला, दो आरोपीयों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

संजीवनी टुडे

चाकसू। यहां सदर थाना इलाके में मंगलवार की शाम को एक 12 साल के नाबालिक किडनैप कर लिया गया था । वहीं घटना की जानकारी मिलने के बाद में राजधानी की पुलिस अलर्ट हो गई और जगह-जगह नाकाबंदी की गई और सीसीटीवी कैमरे खगाले गए थे और कंट्रोल रूम पर मिली सूचना शिफ्ट कार में बदमाश अपहरण करते हुए दिखाई दिए वहीं सदर थानाधिकारी पूनम चौधरी ने बताया कि बालक शाम 4 बजे घर के बाहर खेल रहे था एक बच्चे को किडनैप कर लिया गया वहीं कंट्रोल रूम पर सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम बनाई गई और सीसीटीवी कैमरे खगाल ते हुए पुलिस ने सफ़ेद रंग की कार में बदमाश बच्चे को लेकर निकले थे । गाड़ी की पहचान के बाद इस रूट के सीसीटीवी कैमरे खंगाले गए और इधर बालक के घर वालों से जानकारी ली गई तो उन्होंने उनके परिजनों ने सचिन पर शक जाहिर किया और सचिन बड़ी का वास बिलवा इलाके में रहता था पुलिस ने जब सचिन को कॉल किया था उन्होंने बताया कि वह चेन्नई गया हुआ बताया है । वहीं पुलिस ने सचिन के मोबाइल का लोकेशन निकालते हुए

9 घंटे बाद नाबालिक को ढूंढ निकाला और पुलिस मौके पर पहुंची तो नाबालिक एक कमरे में बंद था और उसकी आंखों पर पट्टी के साथ आंख पर पट्टी बंधी हुए थे मुंह पर टेप लगी हुई थी वहीं पुलिस ने एक परिचित सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है । वहीं पूछताछ में आरोपी सचिन मीणा ने बताया कि उसे पर कर्ज हो गया था कर्ज उतारने के लिए उसने उसके दोस्त अशोक मीणा के साथ प्लानिंग बनाया और घर के बाहर खेल रहे बच्चे को किडनैप कर लिया गया था । वहीं पुलिस ने बताया कि साइबर सेल की मदद से पकड़े गए थे बदमाश बच्चे को बस्सी बासखो में एक कमरे में बंद कर रखा था । जहां से पुलिस ने बरामद कर लिया है और उनके परिजनों को सुपुर्द किया गया है । वहीं पुलिस घटना के बारे में दोनों आरोपीयों से पूछता कर रही है ।

खबरें फटाफट

उदयपुर में रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में वीरांगनाओं का सम्मान

संजीवनी टुडे

उदयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में अभिनव पहल करते हुए देश के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले वीर शहीदों की वीरांगनाओं का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रत्येक जिले में प्रशासनिक अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने शहीदों के घर जाकर वीरांगनाओं और परिजनों का सम्मान करते हुए मुख्यमंत्री महोदय का संदेश दिया तथा उपहार भेंट किए। इसी कड़ी में बुधवार को उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर राजीव द्विवेदी शहीद कांस्टेबल रतन लाल मीणा के निवास पर पहुंचे और मीणा की वीरांगना पत्नी श्रीमती पुष्पा देवी को सम्मानित किया गया। यहां उन्होंने राज्य सरकार की ओर से भेजी गई भेंट सामग्री शहीद के माता-पिता को भेंट की। इसमें 2100 रुपए नकद, शॉल, श्रीफल, मिठाई एवं मुख्यमंत्री जी का संदेश शामिल है। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल कमलेन्द्र सिंह भाटी ने मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन भी किया। इस अवसर पर जिला कलक्टर कार्यालय के सहायक प्रशासनिक अधिकारी फतह सिंह राठौड़ आदि मौजूद रहे।

सिक्किम के राज्यपाल माथुर 25 को उदयपुर में

संजीवनी टुडे

उदयपुर। सिक्किम के माननीय राज्यपाल ओमप्रकाश माथुर 25 अगस्त की दोपहर 2.45 बजे वायुयान से उदयपुर के डबोक एयरपोर्ट पहुंचेंगे। वे यहां से सड़क मार्ग से गुलाबबाग

स्थित नवलखा भवन पहुंचेंगे और वहां आर्य समाज भवन के म्यूजियम का अवलोकन करेंगे। राज्यपाल माथुर वे शाम 5 बजे उदयपुर के सुखाड़िया रंगमंच पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। उनका रात्रि विश्राम उदयपुर सर्किट हाउस में रहेगा। वे 26 अगस्त की सुबह 9 बजे वाया जयसमंद सलूंबर आसपुर साबला होते हुए बांसवाड़ा पहुंचेंगे और मां त्रिपुरा सुंदरी के दर्शन पश्चात पुनः 2:15 बजे उदयपुर आएंगे। वे शाम 4 बजे वाया गोगुंदा होते हुए रणकपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

ट्रेक्टर ट्रॉली चोरी की घटना का पर्दाफाश

संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। गंगरार थाना पुलिस द्वारा ट्रेक्टर ट्रॉली चोरी की घटना का पर्दाफाश करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर थाना क्षेत्र से चुराया गया ट्रेक्टर व ट्रोली बरामद किया हैं। जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि 30 अप्रेल की रात्री को बोलो का सावता थाना गंगरार से किशनलाल रेगर के घर के बाहर खडा ट्रेक्टर मय ट्रोली को अज्ञात बदमाशो द्वारा चोरी कर ले जाने के मामले मे गंगरार थाने पर प्रकरण दर्ज कर जांच प्रारम्भ की जाकर चोरियों की घटनाओ की रोकथाम एवं खुलासे के लिये अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय चितौडगढ परबत सिंह जैतावत एवं वृताधिकारी गंगरार रामेश्वरलाल के निर्देशन में थानाधिकारी गंगरार फूलचन्द पुनि के नेतृत्व मे हैडकानि. लेहरीलाल , प्रमोद कुमार, कानि. दिनेश कुमार, रामस्वरूप, रिद्धकरण व ओमप्रकाश द्वारा सीसीटीवी फुटेज का बारिकी से विश्लेषण कर तकनीकी साक्ष्य एवं आसूचना संकलित करते हुए ट्रेक्टर चोरी की घटना कारित करने वाले आरोपी भीलवाड़ा जिले के चाखेड थाना बागोर हाल जवासिया थाना हमीरगढ निवासी तेजमल उर्फ सत्तु पुत्र रामचन्द्र कुम्हार को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चोरी का ट्रेक्टर मय ट्रोली बरामद किया गया। आरोपी से अन्य प्रकरणो में चोरी गये ट्रैक्टर ट्रॉली के सम्बन्ध में गहनता से पूछताछ की जा रही है एवं साथी आरोपियों की तलाश जारी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण करेंगी प्रभु श्रीनाथजी के दर्शन

संजीवनी टुडे

राजसमंद। भारत की माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण 23 अगस्त 2024 शुक्रवार को सुबह नाथद्वारा पहुंचेंगी। वे यहां प्रभु श्रीनाथजी के दर्शन कर उदयपुर के लिए प्रस्थान करेंगी। माननीय वित्त मंत्री के भ्रमण के मध्य नजर अतिरिक्त जिला कलक्टर नरेश बुनकर ने अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए हैं। नाथद्वारा उपखंड अधिकारी अजय को प्रोटोकॉल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जिला कलक्टर ने आकांक्षी ब्लॉक झौंथरी संपूर्णता अभियान की ली बैठक

बोर्ड परीक्षा परिणाम के उन्नयन के लिए विशेष कार्य योजना के निर्देश

संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। जिला कलक्टर अंकित कुमार सिंह ने बुधवार को जिला कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में संपूर्णता अभियान आकांक्षी ब्लॉक झौंथरी में दिए गए इंडिकेटर्स के आधार पर अब तक हुई प्रगति की समीक्षा की। बैठक में जिला कलक्टर ने शिक्षा विभाग के विभिन्न मानकों की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में 60 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक के मानक पर विशेष फोकस करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बोर्ड परीक्षा में ओर अधिक बेहतर परिणाम के लिए ब्लॉक में विद्यालय वार विशेष कार्य योजना बनाते हुए क्रियान्वयन के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस संबंध में ब्लॉक के विद्यालयों के संस्था प्रधानों के साथ एक विशेष कार्यशाला का भी आयोजन किया जाएं तथा विद्यालय वार समीक्षा करते हुए विशेष कार्य योजना बनाते हुए फोकस किया जाएं। उन्होंने अपर प्राइमरी से सेकेंडरी लेवल, सेकेंडरी से हायर सेकेंडरी लेवल पर प्रवेश, दसवीं तथा 12वीं बोर्ड में

गत वर्ष रहे परीक्षा परिणाम, रिक्त पद, छात्राओं के लिए शौचालय की स्थिति की प्रगति की भी समीक्षा की। जिला कलक्टर सिंह ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए एएनसी रजिस्ट्रेशन, संस्थागत प्रसव, जन्म के समय कम वजन के शिशु, क्षय रोग सहित अन्य दिए गए इंडिकेटर्स पर अब तक हुई प्रगति की जानकारी लेते हुए जन्म के समय शिशु का वजन कम ना हो इस पर फोकस करते हुए गर्भवती महिलाओं को स्वयं एवं शिशु के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने, पौष्टिक आहार की जानकारी देने के निर्देश दिए। उन्होंने आईसीडीएस विभाग की बिंदुवार समीक्षा करते हुए जिन आंगनबाड़ी केंद्रों पर शौचालय के लिए स्वीकृति जारी हो चुकी हैं वहां शीघ्रता से कार्य करने, गर्भवती महिलाओं के पोषण प्रति ध्यान देने, सतत मॉनिटरिंग कर गर्भवती महिलाओ पर विशेष ध्यान देते हुए काउंसलिंग करवाने, गर्भवती महिलाओं के आहार, आंगनबाड़ी केंद्र पर बच्चों के वजन एवं ऊंचाई मापने, 5 वर्ष से कम वजन के आहार आदि की भी जानकारी ली। बैठक में कृषि विभाग के सॉइल हेल्थ कार्ड वितरण, पशुपालन विभाग के वैक्सीनेशन, राजीविका के एसएचजी, बीएसएनएल के भारत नेट कनेक्शन तथा लाइव भारत नेट, पीएचइडी विभाग के एफएसटी कनेक्शन सहित अन्य इंडिकेटर पर समीक्षा करते हुए सभी विभागों को गंभीरता के साथ निर्धारित लक्ष्य के लिए कार्य करने के निर्देश दिए। बैठक में संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अलंकार गुप्ता, आईसीडीएस अधिकारी, राजीविका, पीएचईडी, पशुपालन, कृषि सहित सभी संबंधित विभागों के अधिकारीगण मौजूद रहे।

रक्षाबंधन पर बेरहम पिता ने बेटे को घर बुलाया और कुल्हाड़ी से वार कर उतारा मौत के घाट

संजीवनी टुडे

उदयपुर।उदयपुर जिले के झाड़ोल थाना क्षेत्र के मोहमद फलासिया के घाटा फला में सोमवार को रक्षाबंधन के दिन पिता और बेटे के बीच कहासुनी होने पर पिता ने बेटे की कुल्हाड़ी से वार कर हत्या कर दी। घटना की जानकारी मंगलवार सुबह सरपंच प्रकाशचंद्र डूंगरी को मिली। सरपंच ने पुलिस थाना झाड़ोल में घटना की सूचना दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की जानकारी लेते हुए मौका पर्चा बनाया। उसके बाद मृतक लक्ष्मण का शव झाड़ोल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की मोर्चरी पर पहुंचाया। जहां पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया। बताया कि सुशीला पत्नी लक्ष्मण डूंगरी ने झाड़ोल पुलिस थाने में रिपोर्ट देकर बताया कि सोमवार रात्रि करीब 11 बजे मेरे पति लक्ष्मण (35) को मेरे ससुर देवा पुत्र कुकिया डूंगरी और देवर पिंटू ने अपने घर बुलाया। जहां दोनों के बीच कहासुनी होने पर मेरे पति लक्ष्मण पर कुल्हाड़ी से वार कर हत्या कर दी। मंगलवार सुबह घटना की सूचना सरपंच प्रकाशचंद्र डूंगरी ने झाड़ोल थाने में दी। सूचना पर एएसआई जगदीशचंद्र मय जाप्ता मौके पर पहुंचे और मौका पर्चा बना कर शव को झाड़ोल सीएचसी की मोर्चरी में पहुंचाया।

राजस्थान में भारत बंद के बीच आई थी बड़ी खबर, उदयपुर शहर में हुआ तनाव का हालात, मौके पर किया पुलिस बल तैनात

संजीवनी टुडे

उदयपुर। राजस्थान में भारत बंद के बीच बड़ी खबर सामने आई थी। उदयपुर जिले के मोचीवाड़ा इलाके में तनाव के बीच पुलिस बल तैनात किया गया है। दरअसल, मोचीवाड़ा स्थित मंदिर के पास झूठन डालने पर बवाल मच गया। इस घटना को लेकर समाज के लोगों में आक्रोश व्याप्त है। ऐसे में सुरक्षा के लिहाज से बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात है। पुलिस के मुताबिक उदयपुर के मोचीवाड़ा इलाके में देर रात अज्ञात व्यक्ति ने मंदिर के पास मांस के टुकड़े फेंक दिए थे। आज सुबह जब लोगों ने देखा तो पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही थाना पुलिस मौके पर पहुंची। तभी घटना से गुस्साए लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया और नारेबाजी की। इस पर पुलिस अधिकारियों ने लोगों से समझाइश की और मामला शांत कराया। फिलहाल, मौके पर पुलिस बल तैनात किया गया है।

उदयपुर के बाजारों में पसरा सन्नाटा

इधर, भारत बंद के चलते उदयपुर के बाजारों में सन्नाटा पसरा हुआ है। बापू बाजार,

शक्ति नगर, देहली गेट सहित के आसपास के बाजारों में दुकानें बंद है।

उदयपुर में आज स्कूलें खुली। लेकिन, कई स्कूलों में कम ही संख्या में बच्चे पहुंचे। कई जगह परिजन आज परिजनों ने अपने बच्चों को स्कूल ही नहीं भेजा। हालांकि, बंद से आवश्यक सेवाओं एम्बुलेंस, अस्पताल, मेडिकल स्टोर, डेयरी और पेट्रोल पंप को बाहर रखा है। बंद के चलते शहरभर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम है। बता दें कि उदयपुर में लगातार चर्चा में है। हाल में ही यहां सरकारी स्कूल में चाकूबाजी की घटना के बाद जमकर बवाल मचा था। ऐसे में पुलिस प्रशासन ने स्कूलों की छुट्टी कर दी थी और नेटंबदी का ऐलान किया था। हालांकि, चाकूबाजी में घायल स्टूडेंट की 19 अगस्त को मौत हो गई थी। जिसका मंगलवार को कड़ी सुरक्षा के बीच अंतिम संस्कार किया गया था। दो साल पहले भी कन्हैयालाल हत्याकांड के कारण भी उदयपुर काफी चर्चा में रहा था।

राजसमंद में बंद के दौरान पुलिस-प्रशासन के माकूल इंतज़ामों को आमजन ने सराहा

संजीवनी टुडे

जिला कलक्टर डॉ. भंवर लाल और एसपी मनीष त्रिपाठी ने पल-पल की मॉनिटरिंग

राजसमंद। सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्णय के संबंध में कुछ संगठनों द्वारा किए गए भारत बंद के तहत राजसमंद में बंद शांतिपूर्ण रहा। जिला कलक्टर डॉ. भंवर लाल और एसपी मनीष त्रिपाठी के निर्देशन में जिले में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस-प्रशासन ने व्यापक इंतजाम किए थे, जिसकी स्थानीय लोगों ने सराहना की। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में सुरक्षा बनाए रखने के लिए कड़ी पुलिस व्यवस्था की गई थी। पुलिस प्रशासन के अधिकारी और जवान लगातार गश्त पर रहे। सुरक्षा के मद्देनजर जिला कलेक्टर डॉ. भंवरलाल और पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी ने निरंतर स्थिति का जायजा लिया और पूरी

गतिविधियों पर पल-पल नजर बनाए रखी। रैली के दौरान भी पुलिसकर्मी पर्याप्त संख्या में मौजूद रहे। पुलिस प्रशासन ने प्रमुख बाजारों, संवेदनशील स्थानों और चौराहों पर विशेष सुरक्षा इंतजाम किए थे। पुलिस बल के साथ-साथ प्रशासनिक अधिकारियों की टीम भी लगातार सक्रिय रही। बंद के दौरान जिले में कहीं भी कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। पुलिस और प्रशासन की त्वरित प्रतिक्रिया से बंद शांतिपूर्ण सम्पन्न हुआ। जिला कलेक्टर डॉ. भंवरलाल और एसपी मनीष त्रिपाठी ने यह भी सुनिश्चित किया कि किसी भी तरह की अफवाह न फैले और बंद शांतिपूर्ण रहे। स्थानीय नागरिकों ने पुलिस और प्रशासन की सक्रियता की सराहना की। जिले में बंद के दौरान सामान्य जनजीवन प्रभावित नहीं हुआ। प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए यह सुनिश्चित किया कि जिले में शांति, सुरक्षा और सौहार्द का माहौल बना रहे।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन आज से उदयपुर दौरे पर, दो दिन का रहेगा प्रवास

संजीवनी टुडे

विविध कार्यक्रमों में लेंगीं भाग, जीएसटी भवन का करेंगी उद्घाटन

उदयपुर। केंद्रीय वित्त एवं सहकारी मामलात विभाग मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन दो दिवसीय दौरे पर गुरूवार को उदयपुर आएंगीं। जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल ने केंद्रीय वित्त मंत्री के यात्रा कार्यक्रम को लेकर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए हैं। कलक्टर पोसवाल ने बताया कि केंद्रीय वित्त मंत्री गुरुवार सुबह दिल्ली से प्रस्थान कर 11.20 बजे डबोक एयरपोर्ट पहुंचेगीं। वे दोपहर 12.30 बजे रीजनल रूरल बैंक (वेस्ट एण्ड सेन्ट्रल) की समीक्षा बैठक लेंगीं। इसके पश्चात अपराह्न 3.30 बजे एयरपोर्ट रोड़ स्थित स्मॉल इंडस्ट्रीज डवलपमेंट बैंक कार्यालय का निरीक्षण करेंगी तथा सुखेर औद्योगिक क्षेत्र पहुंच कर हवेली मार्बल प्राईवेट लिमिटेड का अवलोकन करेंगीं। केन्द्रीय मंत्री का शाम 5 बजे मार्बल भवन में मार्बल कलस्टर से जुड़ी एमएसएमई यूनिट संचालकों से संवाद कार्यक्रम होगा। इसके बाद होटल देवीगढ़ पहुंच

कर रात्रि विश्राम करेंगीं। श्रीमती सीतारमन अगले दिन 23 अगस्त को सुबह नाथद्वारा पहुंच कर श्रीनाथजी के दर्शन करेंगी। सुबह 11.15 बजे हिरण मगरी सेक्टर 14 में जीएसटी भवन के लोकार्पण समारोह में भाग लेंगीं। वहां से दोपहर 1.45 बजे रवाना होकर 2.30 बजे डबोक एयरपोर्ट पहुंचेंगीं तथा अपराह्न 3 बजे विमान से दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगीं। भारत सरकार के वित्त विभाग के सचिव श्री एम नागराजू 22 अगस्त की सुबह 11.20 बजे वायुयान से उदयपुर आएंगे। वे केंद्रीय वित्त एवं सहकारी मामलात विभाग मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन के साथ आयोजित कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। वे 23 की अपराह्न 3.20 बजे वायुयान से दिल्ली प्रस्थान कर जाएंगे।

अस्पताल के बाहर बनाया जा रहा था सड़े हुए फलों का जूस, खाद्य विभाग ने पकड़ा

संजीवनी टुडे

जयपुर। सीएम भजनलाल शर्मा की पहल एवं चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशों पर संचालित ल्लशुद्ध आहार–मिलावट पर वारङ्क अभियान के तहत सवाई मानसिंह अस्पताल के बाहर फूड वेंडर्स के यहां मंगलवार को निरीक्षण कार्रवाई की गई। खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान के निर्देशन में चिकित्सा शिक्षा विभाग, एसएमएस अस्पताल

प्रशासन, खाद्य सुरक्षा विभाग तथा नगर निगम ग्रेटर की विजिलेंस टीम द्वारा संयुक्त कार्रवाई की गई। अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा ने बताया कि कार्रवाई के दौरान एसएमएस हॉस्पिटल के बाहर लगे फूड वेंडर्स के फूड लाइसेंस आदि चेक किए गए, जिसमें गंभीर अनियमितताएं मिलीं। जोया फ्रूट एवं जूस सेंटर द्वारा सड़े हुए फलों का रस बनाया जा रहा था। साथ ही फलों के रस में कृत्रिम रंग मिलाया जा रहा था। अन्य वेंडर्स के यहां भी यह अनियमितताएं पाई गईं। साथ ही, वेंडर्स लाइसेंस के विपरीत जाकर सिगरेट, गुटका, तंबाकू आदि बेच रहे थे। नगर निगम द्वारा सड़क एवं फुटपाथ पर अतिक्रमण कर व्यवसाय करने पर सामान जब्त किया गया और चालान की कार्रवाई की गई। साथ ही, भविष्य में अतिक्रमण नहीं करने के लिए पाबंद किया गया। उल्लेखनीय है कि एसएमएस अस्पताल के चिकित्सकों एवं स्टाफ द्वारा यह अंदेशा व्यक्त किया गया था कि फुटपाथ पर कई लोगों द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर व्यवसाय किया जा रहा है। अस्पताल और मेडिकल कॉलेज प्रशासन की शिकायत पर यह कार्रवाई की गई।

रोजगार सहायता शिविर 29 अगस्त को

संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। जिला प्रशासन एवं जिला रोजगार कार्यालय, डूंगरपुर के संयुक्त तत्वावधान में 29 अगस्त गुरूवार को प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक ''रोजगार सहायता शिविर'' का आयोजन भोगीलाल पण्ड्या राजकीय महाविद्यालय के खेल मैदान में आयोजित किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी मंजू माली ने बताया कि इस शिविर में निजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा रिक्त पदों की पूर्ति के लिए साक्षात्कार लिए जाकर मौके पर ही चयन किया जाएगा। कक्षा 8वीं, 10वीं एवं 12वीं एवं स्नातक, आईटीआई योग्यता के इच्छुक बेरोजगार आशार्थी अपने मूल शैक्षणिक योग्यता के प्रमाण पत्र, दो फोटो तथा बायोडेटा के साथ शिविर में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।000कृषक पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित डूंगरपुर, 21 अगस्त। कृषि उन्नति योजना के कृषि विस्तार पर उप मिशन (एसएमएई) आत्मा योजनान्तर्गत वर्ष 2024-25 में राज्य, जिला तथा पंचायत स्तर पर विभिन्न कृषि उद्यमों के श्रेष्ठ कृषकों को पुरस्कृत किया जाना हैं। इस पुरस्कार के लिए प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर पांच कृषकों का चयन प्रत्येक गतिविधिवार अलग-अलग कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं डेयरी, जैविक खेती एवं नवाचारी खेती गतिविधियों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कृषकों में से एक-एक कृषक का चयन किया जाएगा। इस प्रकार प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर कुल 5 कृषकों का चयन प्रत्येक गतिविधिवार किया जाएगा। कृषि विभाग डूंगरपुर के संयुक्त निदेशक परेश कुमार पण्ड्या ने बताया कि पंचायत समिति स्तर पर चयनित कृषकों में से 10 सर्वश्रेष्ठ कृषकों को (प्रत्येक गतिविधि के लिए 2 सर्वश्रेष्ठ कृषक) जिला स्तर पर चयनित किया जाएगा तथा प्रदेश के समस्त जिलों से चयनित कृषकों में से राज्य स्तर पर 10 सर्वश्रेष्ठ कृषकों का (प्रथम एवं द्वितीय स्तर पर 5-5 कुल 10) का चयन होगा। पुरस्कार के लिए प्रत्येक गतिविधिवार पंचायत समिति स्तर पर राशि 10 हजार रूपए, जिला स्तर पर राशि 25 हजार रूपए एवं राज्य स्तर पर राशि 50 हजार रूपए देने का प्रावधान हैं। उन्होंने बताया कि पंचायत समिति एवं जिला स्तर पर सम्मानित किए जाने वाले कृषक का चयन जिला स्तरीय कमेटी द्वारा किया जाएगा। आत्मा योजना के तहत गत वर्षों में पुरस्कृत कृषकों का चयन दुबारा नहीं किया जाएगा। कृषकों को एक बार ही इस योजना के अन्तर्गत सम्मानित किए जाने का प्रावधान हैं। जिन कृषकों को पूर्व में आत्मा योजनान्तर्गत किसी भी स्तर पर चयनित किया जा चुका हैं, वह कृषक पुनः आवेदन के पात्र नहीं होंगे। इस योजना के तहत कृषक स्वयं या निर्वाचित जनप्रतिनिधि या कोई अन्य व्यक्ति, संस्था, विभाग यदि किसी कृषक को योग्य समझता है तो प्रस्ताव उसके द्वारा चिन्हित पांच गतिविधियों में से किसी एक क्षेत्र, उद्यम, गतिविधि में किए गए उत्कृष्ट कार्यों का विवरण मय 5-7 फोटोग्राफ्स सहित प्रस्तुत करते हुए नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। निर्धारित आवेदन पत्र कृषि विभाग कार्यालय क्षेत्र में कार्यरत सहायक कृषि अधिकारी से प्राप्त किया जा सकता हैं। योजना में पुरस्कृत किए जाने के लिए कृषक के निर्धारित प्रारूप में प्रस्ताव 30 सितम्बर 2024 तक आमंत्रित किए जाएंगे।

उदयपुरकांड- प्रिंसिपल सस्पेंड, क्लास टीचर को एपीओ किया: स्कूल में चाकूबाजी की घटना के बाद शिक्षा विभाग एक्शन मोड में

संजीवनी टुडे

5 दिन बाद नेटबंदी हटाई

उदयपुर।उदयपुर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भटियानी चौहट्टा की प्रिंसिपल ईशा धर्मावत को निलंबित कर दिया गया है। इस आशय का आदेश माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक आशीष मोदी ने मंगलवार देर शाम जारी किया था। 16 अगस्त को छात्र पर साथी छात्र द्वारा चाकू से हमला करने के मामले को विभाग ने प्रिंसिपल व स्टाफ की लापरवाही माना है। इस प्रकरण में प्रिंसिपल ने नियमित रूप से विद्यार्थियों की निगरानी नहीं की। उनकी उपस्थिति और अनुशासन को लेकर ध्यान नहीं रखा गया। इसी वजह से इस तरह की घटना हुई है। निलंबन के दौरान उनका मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर रहेगा। इसी प्रकार उदयपुर संभाग के संयुक्त निदेशक महेंद्र कुमार जैन ने वरिष्ठ अध्यापक राकेश कुमार जारोली (क्लास टीचर) को एपीओ कर दिया है। उनके विरुद्ध विभागीय जांच बैठाई है और उनका मुख्यालय सीबीईओ भैसरोड़गढ़,

चित्तौड़गढ़ कर दिया गया है। घटना के बाद कलेक्टर अरविंद पोसकल की ओर से स्कूल प्रबंधन की लापरवाही मानते हुए शिक्षा विभाग को पत्र लिखा गया था।

इसमें जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की अनुशंसा की गई थी। मृतक (छात्र) के परिजनों ने भी पोस्टमार्टम से पहले हुए समझौते में स्कूल के जिम्मेदार स्टाफ पर कार्रवाई की मांग की थी। संभागीय आयुक्त और कलेक्टर ने उन्हें कार्रवाई का आश्वासन दिया था। उधर, जिला प्रशासन ने स्कूल और कॉलेज खोलने के आदेश मंगलवार को जारी कर दिए थे। अब छात्रों के स्कूल बैग और जेब की जांच होगी। माध्यमिक शिक्ष विभाग ने प्रदेश के सभी स्कूलों में हथियार, कैंची, चाकू और नुकीली वस्तुओं के लाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। डीईओ लोकेश भारती ने भी शहर सहित पूरे जिले (सलुंबर भी) में इस आदेश के पालन के निर्देश दिए हैं। उदयपुर शहर में पिछले 5 दिनों से बंद इंटरनेट सेवाएं आज दोपहर 2 बजे शुरू कर दी गई हैं। उदयपुर आईजी अजयपाल लांबा ने कहा- पांच दिन बाद इंटरनेट बहाल कर दिया गया है। इसके शुरू होने के साथ ही कुछ लोग तरह-तरह की भ्रामक जानकारी फैलाने का प्रयास करें तो उस पर ध्यान नहीं दें। कोई भी ऐसा कृत्य करे तो पुलिस को सूचना दें। पुलिस की ऐसे लोगों पर पूरी नजर रहेगी और ऐसे लोगों पर हम सख्त कार्रवाई करेंगे।

पंजाब के राज्यपाल कटारिया पहुंचे छात्र के घर

पंजाब के राज्यपाल और चण्डीगढ़ के प्रशासक गुलाबचंद कटारिया स्थानीय जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आज अपरान्ह खेरादीवाड़ा में मृतक छात्र के घर पर पहुंचे। वहां उन्होंने परिजनों को सांत्वना दी और राज्य सरकार की ओर से 9 लाख 12 हजार रुपए की तात्कालिक सहायता राशि उपलब्ध कराई। राज्यपाल कटारिया, शहर विधायक ताराचंद जैन, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल, पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल आदि खेरादीवाड़ा में देवराज के घर पहुंचे। कटारिया ने पीड़ित परिवारों को संबल देते हुए मृतक छात्र के उच्च स्तर तक पढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

अजा जजा आरक्षण में उपवर्गीकरण के विरोध में बसपा ने सौंपा ज्ञापन

संजीवनी टुडे

मेनार। बहुजन समाज पार्टी वल्लभनगर के तत्वाधान में गुरूवार को उपखंड मुख्यालय वल्लभनगर में ज्ञापन माननीय राष्ट्रपति के नाम उपखण्ड अधिकारी वल्लभनगर को सौंपा गया। बसपा ज़िला प्रभारी सुरेश कुमार मेघवाल ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा अजा जजा वर्ग में उपवर्गीकरण को लेकर दिए गए फैसले के न्यायसंगत नहीं बताते हुए ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया की इन वर्गो के आरक्षण को लेकर यह फैसला बिल्कुल भी उचित व न्यायसंगत नहीं है। बहुजन समाज पार्टी का केन्द्र सरकार के इस मौखिक आश्वासन में विश्वास नही है। यदि केंद्र सरकार वास्तव में एससी,एसटी की हितैषी है तो तत्काल संसद सत्र बुलाकर दविंदर सिंह बनाम पंजाब राज्य मामले में दिनांक 01 अगस्त 2024 के आए फैसले को पलटते हुए संविधान संशोधन लाए। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से अजा जजा वर्ग की कई जातियां बहुत ज्यादा प्रभावित होंगी जिनकी लंबे समय तक भरपाई करना असंभव होगा। ज्ञापन देने में बहुजन समाज पार्टी उदयपुर के जिला प्रभारी पर वल्लभनगर प्रत्याशी रहे सुरेश कुमार मेघवाल मिठूलाल वल्लभनगर, मुकेश पुरियाखेड़ी, रमेश चंद्र वल्लभनगर, मुकेश खेमपुर, तेजपाल खेमपुर, गणपत खटीक, देवीलाल, ओमप्रकाश मेघवाल समेत कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय

शिक्षा नीति के जरिये उच्च शिक्षा क्षेत्र में आएँगे कई क्रांतिकारी परिवर्तन

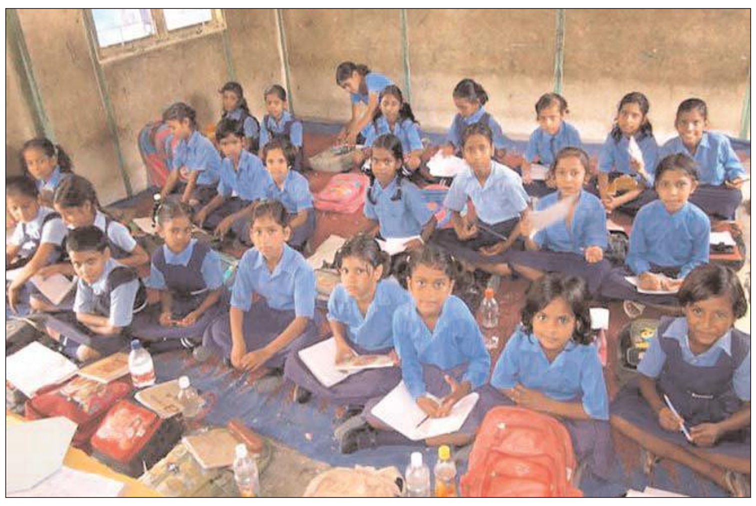

समय के अनुसार शिक्षा के तरीकों और पाठ्यक्रमों में परिवर्तन आवश्यक होते हैं। इसी को देखते हुए भारत सरकार ने पिछले 34 सालों से चली आ रही शिक्षा नीति में बदलाव करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मंजूरी दे दी है। बदलते विश्व और वैश्वीकरण के साथ कदम से कदम मिला के चलने के लिए ऐसे परिवर्तनों और सुधारों की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। शिक्षा नीति देश और समाज का आने वाला कल कैसा होगा ये निर्धारित करने में अहम् भूमिका निभाती है। यह नीति स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के सभी प्रकार के सुधारों पर ध्यान आकर्षित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में उच्च शिक्षा से सम्बंधित अनेक परिवर्तनों और सुधारों को सुझाया गया है। अब महत्वपूर्ण कदम ये होगा कि शिक्षा मंत्रालय और राज्य सरकारें इसे लागू कैसे करती हैं। चूंकि शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में राज्यों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। सरकार की ओर से किये जा रहे प्रयासों से ऐसा प्रतीत अवश्य हो रहा है कि इसे जल्द ही लागू किया जा सकेगा और सही मायनों में शिक्षा के क्षेत्र में भारत एक नया मुकाम हासिल करेगा।इस शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अहम बदलावों को इस लेख में इंगित किया गया है। कई बार यह प्रश्न उठाया जाता है कि छात्रों को अपने विषय मात्र के अलावा उनके आस-पास के मुद्दों, जरूरतों की कोई जानकारी नहीं है ऐसे में सरकार का सुझाव ऐसे संस्थान बनाना है जो अन्तःअनुशासनात्मक होंगे। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक क्षमताओं को विकसित किया जाना है। व्यक्ति के समग्र विकास के लिए कौशल एवं मूल्यपरक शिक्षा पर जोर दिया गया है। छात्रों को अपने स्थानीय निकायों, कलाकारों, शोधार्थियों और शिक्षकों के साथ अपने या किसी दूसरे शिक्षण संस्थान में प्रशिक्षु के रूप में कार्य करने और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाने का मौका मिलेगा। इससे उन्हें रोजगार में भी फ़ायदा मिलेगा।

यदि उच्च शिक्षा के आंकड़ों को देखें तो आज देश का बड़ा तबका कई कारणों से इससे वंचित है। उच्च शिक्षा को आम आदमी तक पहुंचाने के लिए हर जिले या उसके आसपास कम से कम एक उच्च शिक्षा संस्थान बनाये जाने का सुझाव दिया गया है। ताकि सकल नामांकन दर जोकि 2018 में 26.3% थी उसे 2035 तक 50% तक बढ़ाया जा सके। उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कई आधारभूत बदलाव किये गए हैं। अभी तक की व्यवस्था में छात्र यदि किसी कारणवश अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देता है तो उसे किसी भी प्रकार की डिग्री या प्रमाण पत्र नहीं दिये जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इसके लिए अनेक सुझाव दिए गए हैं। यदि कोई छात्र एक वर्ष की पढ़ाई के बाद स्नातक छोड़ना चाहे तो उसे सर्टिफिकेट दिया जायेगा।

यदि दो साल बाद छोड़ता है तो डिप्लोमा और तीन वर्ष पूरे करने पर स्नातक की डिग्री दी जाएगी। इस प्रकार की निकास व्यवस्था का सबसे अधिक फायदा ऐसे छात्रों को होगा जो व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं विदेशी भाषाओं से जुड़े हैं। चूंकि इन क्षेत्रों में कई प्रकार के रोजगार सर्टिफिकेट या डिप्लोमा स्तर के प्रमाण-पत्रों से मिल जाता है। यहाँ एक महत्वपूर्ण बदलाव ये भी है कि जो छात्र चार साल की स्नातक करना चाहते हैं वे स्नातकोत्तर एक साल में ही कर पाएंगे। इस नीति में ख़्र.घ्द्धद्ध को हटाया गया है। दरअसल ख़्र.घ्द्धद्ध की अवधि किसी विश्वविद्यालय में 2 वर्ष है तो किसी में एक वर्ष। ऐसे में ये कहा जाता रहा है कि इतने कम समय में अच्छे शोध की गुंजाइश कम ही होती है। इसके उलट कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इससे शोध पर असर पड़ेगा। लेकिन यहाँ ये जान लेना आवश्यक है कि चार साल की स्नातक को 'बी.ए शोध के साथ' दिए जाने की बात कही गयी है। अतः स्पष्ट है कि ऐसे छात्रों को शोध कार्य करना होगा। अभी तक यह कार्य स्नातकोत्तर के बाद किये जाते थे। यद्यपि इस पर और अधिक स्पष्टता इसके पाठ्यक्रम बनने एवं लागू होने पर ही आएगी। छात्रों के बीच संवाद एवं रचनात्मक सोच विकसित करने के लिए अनेक प्रकार के साहित्यिक, सांस्कृतिक समूह एवं विशेष क्लब बनाये जायेंगे। इसमें शिक्षकों की भूमिका मार्गदर्शक की रहेगी। मेरा मानना है कि इस प्रकार के समूह छात्रों के बीच सहयोग, वाद-संवाद की भारतीय परंपरा को तो आगे बढ़ाएंगे ही साथ में ऐसे छात्र जो अपने विचार बड़े मंचों पर या अधिक लोगों के सामने बोलने में असहज महसूस करते हैं उनके भीतर अपनी बात को तथ्यपरक तरीके से समझाने और कहने का आत्मविश्वास भी पैदा करेगा।

आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) : आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो) : सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

मिथुन (क,की,कू,घ,ङ, छ, के,को, ह) : कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपकी बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) : किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अधूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे) : परिवार के बड़े सदस्यों की आज्ञा मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) : आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते) : आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) : व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) : आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहें तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी) : आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) : आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसको नजरअंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) : आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बडी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएं, अन्य कामों में भी जल्दबाजी ना करें।

बाबा रामदेव: अपने घर शीशे के और दूसरों के घरों पर पत्थर !

पतंजलि समूह के कर्ता धर्ता बाबा रामदेव देश की एक अनोखी व अभूतपूर्व शख़्सियत हैं। पहले गेरुआ वस्त्र धारण कर योग गुरु के रूप में अपनी पहचान बनाई। फिर योग के बहाने अपने अनुयायियों में आयुर्वेद और स्वदेशी पर प्रवचन देना शुरू किया ,इसी माध्यम से उन्होंने अपने लाखों अनुयायी तैय्यार कर उन्हें भावनात्मक रूप से स्वदेशी उत्पाद ख़रीदने के लिये प्रोत्साहित किया। और बाद में पतञ्जलि समूह गठित कर आयुर्वेद दवाइयों का कारोबार शुरू किया और धीरे धीरे खाद्य कृषि-शोध व स्वास्थ्य से लेकर क्ष्थन्द्दद्न्प ध्न्ध-दफ्द्दद्न धन्द्थद्वद्धपथप्द्धधद्वप तक तैयार कर दिये। ख़बरों के अनुसार बाबा जी के 17 टी वी चैनल भी चलते हैं। बताया जाता है कि इस समय पतंजलि समूह का कारोबार करीब 35 हज़ार करोड़ रुपए का है। पतंजलि समूह को देश की दूसरी सबसे बड़ी क्ष्र्व्रक्र्ए कंपनी भी बताया जा रहा है।यह भी कहा जाता है कि इस समय पतंजलि समुह लगभग सभी व्यवसायिक क्षेत्र में अपने पैर पसार चुका है या इसकी कोशिश में लगा है। जहां तक बाबा रामदेव की संपत्ति का प्रश्न है तो पतंजलि आयुर्वेद का स्वामित्व बाबा रामदेव के पास होने के बजाये उनके परम सहयोगी व पतंजलि आयुर्वेद के सीईओ आचार्य बालकृष्ण के पास है। बालकृष्ण के पास कंपनी का लगभग 98.5 फीसदी शेयर है। इस तरह आचार्य बालकृष्ण की संपत्ति अनुमानतः 2.5 बिलियन डॉलर है। मज़े की बात तो यह है कि बाबा रामदेव की संपत्ति शून्य है।बाबा रामदेव ने स्वयं बता चुके हैं कि पतंजलि समूह का पूरा कारोबार करीब 35 हजार करोड़ रुपए का है

परन्तु रामदेव ने जितना अधिक और जितनी तेज़ी से अपने व्यवसाय का विस्तार किया उतना ही अधिक वे विवादों में भी घिरे रहे हैं। उनके व उनके व्यवसायिक पतंजलि समूह के विवादों में घिरने के अलग अलग कारण रहे हैं। कभी वे अपने बड़बोलेपन के कारण विवादों से घिरे कभी नेताओं की तरह अपने अनुयायियों को झूठे सस्ता डीज़ल पेट्रोल दिलाने जैसे झूठे सपने दिखाकर,कभी फटी जीन जैसे पहनावे को बुरा बताकर और बाद में वही फटी जीन ख़ुद बेचते हुए,कभी कोरोना से बचाव की दवा बनाने का दावा करते हुये तो कभी अपने उत्पाद को एलोपैथी दवाईयों से अधिक कारगर बताते हुये। अनेक बार उनके कई ऐसे उत्पाद भी संदिग्ध हो चुके हैं और गुणवत्ता के मापदंड पर फ़ेल या जांच के दौरान अशुद्ध या मिलावटी भी साबित हो चुके हैं जिन्हें वे शुद्ध व स्वदेशी बताते रहे हैं। परन्तु प्रायः यही देखा गया है कि जब वे अपने उत्पाद का गुणगान करते हैं तो साथ ही उसके समान चल रहे दूसरे प्रचलित उत्पाद में कमियां ज़रूर निकालते हैं। और अपने इस व्यवसायिक रवैय्ये के लिये उन्हें कई बार इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ऋद्धऋ से लेकर ड्ढक्क विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधियों यहाँ तक कि अदालतों तक की झिड़कियां भी सुननी पड़ी हैं।

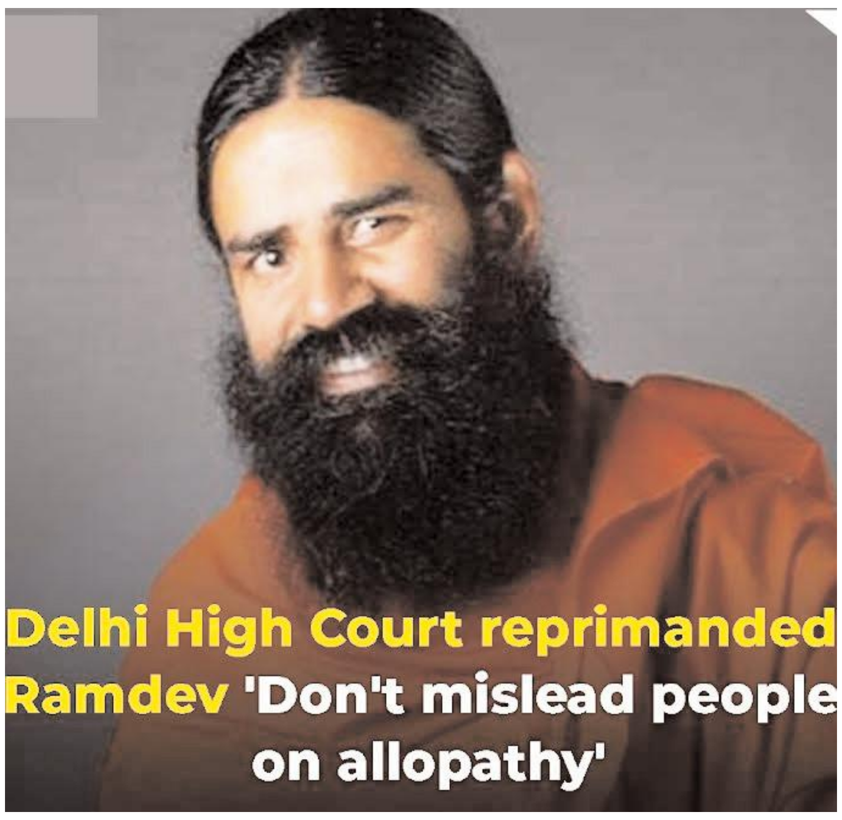

विचार बिन्दु

तनवीर जाफ़री

समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भी एक सूत्रता के रूप में इस पर्व का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार जो कड़ी टूट गयी है उसे फिर से जागृत किया जा सकता है। रक्षा बंधन भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति इतनी लचीली है कि इस में हर संस्कृति समाहित होती चली जाती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, सौराष्ट्र से असम तक देखें तो यहां के लोग प्रतिदिन कोई न कोई त्योहार मनाते मिलेंगे। इन त्योहारों के मूल में आपसी रिश्तों के बीच मधुरता घोलने एवं सरसता लाने की भावना रहती है। भाई-बहन के बीच प्यार, मनुहार व तकरार होना एक सामान्य सी बात है।

रामदेवअपने सार्वजनिक भाषणों में जहां पतंजलि निर्मित कोरोनिल नामक से कोविड-19 का इलाज करने का दावा करते रहे हैं वहीं साथ साथ वे कोरोना वायरस संक्रमण के को नियंत्रित रखने वाली वैक्सीन को भी प्रभावहीन बताते रहे हैं। वे आयुर्वेद चिकित्सा को एलोपैथी चिकित्सा से अधिक प्रभावी भी बता चुके हैं।

पिछले दिनों एक बार फिर बाबा रामदेव ने एलोपैथी के प्रति अपने दुराग्रह को ज़ाहिर करते हुए इसके विरुद्ध जहर उगला। पिछले दिनों जब अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन कोविड संक्रमण का शिकार हुये तो रामदेव ने कहा कि तीन बार वैक्सीन की डोज लेने के बावजूद बाइडेन का संक्रमित हो जाना एलोपैथी की नाकामी का सुबूत है। उन्होंने इसे मेडिकल साइंस की विफलता क़रार दिया। इस बार भी अदालत बाबा दिल्ली उच्च न्यायलय ने रामदेव को फटकार लगाई है। अदालत ने कहा कि किसी को भी एलोपैथी के विरुद्ध गुमराह नहीं किया जाना चाहिए। उच्च न्यायलय ने योग गुरु से कहा कि उन्हें 'तथ्यों से इतर' कुछ भी बोलकर जनता को गुमराह नहीं करना चाहिए। कोविड-19 के इलाज के लिए पतंजलि कंपनी द्वारा विकसित कोरोनिल के संबंध में कथित रूप से गलत सूचनाएं फैलाने को लेकर डॉक्टरों के विभिन्न संगठनों द्वारा योग गुरु के खिलाफ दायर मुकदमे की सुनवाई कर रहे न्यायमूर्ति अनूप जयराम भम्भानी ने कहा कि उनकी चिंता भी प्राचीन औषधि विज्ञान आयुर्वेद के सम्मान को बचाए रखने की है। गत वर्ष विभिन्न संगठनों ने उच्च न्यायालय में मुकदमा दायर करके रामदेव पर आरोप लगाया था कि वह जनता को गुमराह कर रहे हैं कि कोरोना वायरस संक्रमण से होने वाली ज्यादातर मौतों के लिए एलोपैथी जिम्मेदार है और साथ ही वे यह भी दावा कर रहे हैं कि कोरोनिल से कोविड-19 का इलाज किया जा सकता है।

पिछले ही दिनों एक बार फिर पतंजलि ब्रांड का गाय के घी का सैंपल जोकि उत्तराखंड के टिहरी की एक दुकान से लिया गया था,खाद्य सुरक्षा और औषधि विभाग की जांच में फ़ेल हो गया है। घी के नमूने की प्रयोगशाला में की गयी जांच की रिपोर्ट के अनुसार पतंजलि घी में मिलावट की गई थी और पतंजलि ब्रांड का गाय का का घी मानकों के अनुरूप नहीं था जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी है। परन्तु पतंजलि ने इस रिपोर्ट को मानने से इंकार करते हुये राज्य की लैबोरेट्री की रिपोर्ट को ही ग़लत बता डाला। उसके बाद खाद्य सुरक्षा और औषधि विभाग ने घी का नमूना एक बार फिर जांच के लिये केंद्र की प्रयोगशाला में भेजा। पतंजलि ब्रांड का यह घी केंद्रीय प्रयोगशाला में भी फ़ेल हो गया। घी के अतिरिक्त चावल के सैंपल की भी रिपोर्ट भी फ़ेल हो चुके हैं। चार धाम यात्रा में चंबा-धरासू राजमार्ग पर स्थित सेलू पानी में एक होटल से पतंजलि द्वारा बेचे जा रहे खाने के चावल का नमूना लिया गया। इस चावल के सैंपल की भी रिपोर्ट फ़ेल पाई गई है। चावल में बड़ी मात्रा में कीटनाशक मिलने की पुष्टि हुई। जोकि उपभोक्ता के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

दरअसल रामदेव व उनके सहयोगी बालकृष्ण अपने द्वारा संचालित टी वी चैनल्स के अतिरिक्त अन्य प्रमुख टी वी चैनल्स पर भी अपने विभिन्न उत्पादों के भ्रामक विज्ञापन देकर अपने अनुयायियों सहित देश की आम जनता को भी गुमराह कर अपना व्यवसाय बढ़ाने में माहिर हैं। उनकी कंपनी छोड़ चुके अनेक कर्मचारी उनके उत्पाद और उनके व्यवसाय की हक़ीक़त को उजागर करते रहे चुके हैं। परन्तु सत्ता के रहम-ो-करम पर नक़्ली,मिलावटी व विषाक्त पदार्थों के उत्पादन लिये न तो रामदेव की कंपनी के विरुद्ध कोई कार्रवाई की जा रही है न ही उनकी बेलगाम वाणी पर नियंत्रण पाया जा रहा है। शायद यही वजह है कि उनके अपने घर शीशे के होने के बावजूद उनका दूसरों के घरों पर पत्थर फेंकने का सिलसिला बदस्तूर जारी है ?

गणपति करेंगे सभी दुखों का नाश, राशि अनुसार लगाएं यह खास भोग

भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को भगवान श्रीगणेश के अवतरण की तिथि माना गया है। यह तिथि सभी संकटों का नाश करने वाली है। इस तिथि को सर्व कामनाओं को प्रदान करने वाली माना जाता है। भगवान शिव द्वारा श्रीगणेश को पुनः जीवित करने की घटना इसी तिथि को हुई थी। इसलिए यह तिथि पुण्य पर्व के रूप में मनाई जाती है। 22 अगस्त से 1 सितंबर तक चलने वाले इस उत्सव में हरेक व्यक्ति भगवान गणपति की कृपा पाने का इच्छुक रहता है। किसी भी कार्य को यदि सही मुहूर्त पर सम्पन्न किया जाता है तो कार्य की सफलता व सुख-शांति निश्चित हो जाती है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर के निदेशक ज्योतिषविद् एवं कुण्डली विश्लेषक अनीष व्यास ने बताया कि इस वर्ष गणेश चतुर्थी ऐसे समय में मनाई जा रही है जब सूर्य सिंह राशि में और मंगल मेष राशि में हैं। सूर्य और मंगल का यह योग 126 साल बाद बन रहा है। यह योग विभिन्न राशियों के लिए अत्यंत फलदायी रहेगा। भगवान श्रीगणेश बुद्धि, समृद्धि और सौभाग्य के देवता हैं। उनके जन्म का उत्सव दस दिनों तक उत्साह से मनाया जाता है और अनंत चतुर्दशी पर समाप्त होता है। माना जाता है कि भगवान श्रीगणेश का जन्म मध्याह्न काल में हुआ, इसीलिए मध्याह्न के समय को श्रीगणेश की पूजा के लिए उपयुक्त माना जाता है। प्राचीन काल में बच्चों का विद्या अध्ययन इसी दिन से प्रारंभ होता था। इस दिन विधि-विधान से श्रीगणेश का पूजन करें। उन्हें वस्त्र अर्पित करें। नैवेद्य के रूप में मोदक अर्पित करें। इस दिन चंद्रमा के दर्शन को निषिद्ध किया गया है। माना जाता है कि जो व्यक्ति इस रात्रि चंद्रमा को देखते हैं उन्हें मिथ्या कलंक भोगना होता है। भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक अनीष व्यास ने बताया कि गणेश चतुर्थी को शुभ मुहूर्त में भगवान गणेश की स्थापना करना अच्छा होता है। इस बार 21 अगस्त को 11 बजे सुबह चुतुर्थी शुरू हो जाएगी। 22 अगस्त को 7.57 शाम तक चुतुर्थी तिथि रहेगी। इसमें राहुकाल को हटाकर आप गणपति की स्थापना कर सकते हैं। पूजन का शुभ मुहूर्त दोपहर 12:45 बजे है। विशेष मुहूर्त सुबह 11:45 से दोपहर 12:45 से है। पूजन का शुभ मुहूर्त दोपहर 12:45 बजे है। विशेष मुहूर्त सुबह 11:45 से दोपहर 12:45 से है।विश्वविख्यात भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक अनीष व्यास ने बताया कि गणपति की स्थापना करते हुए इस बात का ध्यान रखें कि मूर्ति का मुंह पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए। गणेश पूजा शुरू करने से पहले संकल्प लेना होता है, इसके बाद भगवान गणेश का आह्वान किया जाता है। इसके बाद गणपति की मंत्रों के उच्चारण के बाद स्थापना की जाती है। भगवान गणेश को धूप, दीप, वस्त्र, फूल, फल, मोदक अर्पित किए जाते हैं। इसके बाद भगवान गणेश की आरती उतारी जाती है। विश्वविख्यात भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक अनीष व्यास ने बताया कि 10 दिन तक चलने वाला गणेश चतुर्थी उत्सव 22 अगस्त से शुरू होगा। गणेश चतुर्थी पर लोग अपने घरों में गणेश भगवान को विराजमान करते हैं और गणेश चतुर्थी के दिन उनका विसर्जन किया जाता है। लोग 11या 7 दिन के लिए घर में गणपति को विराजमान करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि बप्पा इन दिनों में अपने भक्तों के सभी दुख दूर करके ले जाते हैं।

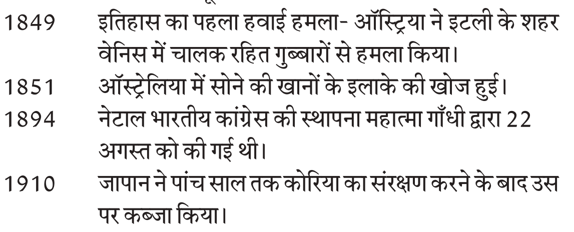

22 अगस्त की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1320	नसीरूद्दीन खुसरू को गाजी मलिक ने हराया
1639	ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) की स्थापना की।
1848	अमेरिका ने न्यू मैक्सिको पर कब्जा किया।
1849	इतिहास का पहला हवाई हमला- ऑस्ट्रिया ने इटली के शहर वेनिस में चालक रहित गुब्बारों से हमला किया।
1851	ऑस्ट्रेलिया में सोने की खानों के इलाके की खोज हुई।
1894	नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना महात्मा गाँधी द्वारा 22 अगस्त को की गई थी।
1910	जापान ने पांच साल तक कोरिया का संरक्षण करने के बाद उस पर कब्जा किया।
1914	ब्रिटिश और जर्मन सैनिकों के बीच बेल्जियम में पहली मुठभेड़ हुई।
1921	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई
1978	केन्या के पहले राष्ट्रपति जोमो केन्याता का 83 साल की उम्र में निधन हुआ।
1979	राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने लोकसभा भंग की
2002	काठमांडू में सार्क विदेश मंत्रियों का सम्मेलन सम्पन्न, नेपाल में हवाई दुर्घटना में 16 व्यक्ति मारे गये।
2007	मिस्र के पुरातत्त्वविदों ने पश्चिम रेगिस्तान के सिवा क्षेत्र में लगभग 20 लाख साल पुराने मानव के पद-चिह्नों का पता लगाया।

औचित्य खोते वैश्विक संगठन

विचार बिन्दु

डॉ नीलम महेंद्र

दरअसल राजनीति अपनी जगह है और मानवता की रक्षा अपनी जगह। क्या यह इतना सरल है कि स्वयं को विश्व की महाशक्ति कहने वाले अमरीका की फौजों के रहते हुए वो पूरा देश ही उस आतंकवादी संगठन के कब्जे में चला जाता है।

दृश्य 1: सुरक्षित स्थान की तलाश में अपने ही देश से पलायन करने के लिए एयरपोर्ट के बाहर हज़ारों महिलाएं, बच्चे और बुजुर्गों की भीड़ लगी है। कई दिन और रात वो भूखे प्यासे वहीं डटें हैं इस उम्मीद में कि किसी विमान में सवार हो कर वो अपना और अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित करने में कामयाब हो जाएंगे। बाहर तालिबान है, भीतर नाटो की फौजें। हर बीतती घड़ी के साथ उनकी उम्मीद की डोर टूटती जा रही है। ऐसे में महिलाऐं अपनी छोटे छोटे बच्चों की जिंदगी को सुरक्षित करने के लिए उन्हें नाटो फ़ौज के सैनिकों के पास फेंक रही हैं। इस दौरान कई बच्चे कँटीली तारों पर गिरकर घायल हो जाते हैं।

दृश्य 2: इस प्रकार की खबरें और वीडियो सामने आते हैं जिसमें अफगानिस्तान में छोटी छोटी बच्चियों को तालिबान घरों से उठाकर ले जा रहा है।

दृश्य 3: अमरीकी विमान टेक ऑफ के लिए आगे बढ़ रहा है और लोगों का हुजूम रनवे पर विमान के साथ साथ दौड़ रहा है। अपने देश को छोड़कर सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कुछ लोग विमान के टायरों के ऊपर बनी जगह पर सवार हो जाते हैं। विमान के ऊंचाई पर पहुंचते ही इनका संतुलन बिगड़ जाता है और आसमान से गिरकर इनकी मौत हो जाती है। इनके शव मकानों की छत पर मिलते हैं।

दृश्य4: एक जर्मन पत्रकार की खोज में तालिबान घर घर की तलाशी ले रहा है, जब वो पत्रकार नहीं मिलता तो उसके एक रिश्तेदार की हत्या कर देता है और दूसरे को घायल कर देता है। ऐसे न जाने कितने हृदयविदारक दृश्य पिछले कुछ दिनों दुनिया के सामने आए। क्या एक ऐसा समाज जो स्वयं को विकसित और सभ्य कहता हो उसमें ऐसी तर्स्वीरें स्वीकार्य हैं? क्या ऐसी तर्स्वीरें महिला और बाल कल्याण से लेकर मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए बने तथाकथित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के औचित्य पर प्रश्न नहीं लगातीं? क्या ऐसी तर्स्वीरें अमरीका और यूके समेत 30 यूरोपीय देशों के नाटो जैसे तथाकथित वैश्विक सैन्य संगठन की शक्ति का मजाक नहीं उड़ातीं?

इसे क्या कहा जाए कि विश्व की महाशक्ति अमेरिका की सेनाएँ 20 साल तक अफगानिस्तान में रहती हैं, अफगान सिक्युरिटी फोर्सेज पर तकरीबन 83 बिलियन डॉलर खर्च करती है उन्हें ट्रेनिगं ही नहीं हथियार भी देती हैं और अंत में साढ़े तीन हज़ार सैनिकों वाली अफगान फौज 80 हज़ार तालिबान लड़ाकों के सामने बिना लड़े आत्मसमर्पण कर देती है। वहां के राष्ट्रपति एक दिन पहले तक अपने देश के नागरिकों को भरोसा दिलाते हैं कि वो देश तालिबान के कब्जे में नहीं जाने देंगे और रात को देश छोड़कर भाग जाते हैं। तालिबान सिर्फ अफगानिस्तान की सत्ता पर ही काबिज़ नहीं होता बल्कि आधुनिक अमरीकी हथियार, गोला बारूद, हेलीकॉप्टर और लड़ाकू विमानों से लेकर दूसरे सैन्य उपकरण भी तालिबान के कब्जे में आ जाते हैं।अमरीकी सेनाओं के पूर्ण रूप से अफगानिस्तान छोड़ने से पहले ही यह सब हो जाता है वो भी बिना किसी संघर्ष के। ऐसा नहीं है कि सत्ता संघर्ष की ऐसी घटना पहली बार हुई हो। विश्व का इतिहास सत्ता पलट की घटनाओं से भरा पड़ा है। लेकिन मानव सभ्यता के इतने विकास के बाद भी इस प्रकार की घटनाओं का होना एक बार फिर साबित करता है कि राजनीति कितनी निर्मम और क्रूर होती है। अफगानिस्तान का भारत का पड़ोसी देश होने से भारत पर भी निश्चित ही इन घटनाओं का प्रभाव होगा। दरअसल भारत ने भी दोनों देशों के सम्बंध बेहतर करने के उद्देश्य से अफगानिस्तान में काफी निवेश किया है। अनेक प्रोजेक्ट भारत के सहयोग से अफगानिस्तान में चल रहे थे। सड़कों के निर्माण से लेकर डैम, स्कूल, लाइब्रेरी यहाँ तक कि वहाँ की संसद बनाने में भी भारत का योगदान है। 2015 में ही भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वहाँ के संसद भवन का उद्घाटन किया था जिसके निर्माण में अनुमानतः 90 मिलियन डॉलर का खर्च आया था। लेकिन आज अफगानिस्तान की सत्ता पर तालिबान काबिज़ है जो एक ऐसा आतंकवादी संगठन है जिसे पाकिस्तान और चीन का समर्थन हासिल है। भारत इस चुनौती से निपटने में सैन्य से लेकर कूटनीतिक तौर पर सक्षम है। पिछले कुछ वर्षों में वो अपनी सैन्य शक्ति और कूटनीति का प्रदर्शन सर्जिकल स्ट्राइक और आतंकवाद समेत धारा 370 हटाने जैसे अनेक अवसरों कर चुका है लेकिन असली चुनौती तो संयुक्त राष्ट्र संघ, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद, यूनिसेफ, जैसे वैश्विक संगठनों के सामने उत्पन्न हो गई है जो मानवता की रक्षा करने के नाम पर बनाई गई थीं।लेकिन अफगानिस्तान की घटनाओं ने इनके औचित्य पर ही प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

अच्छा कोलेस्ट्रॉल बढ़ाना है तो खाएं ये 7 चीजें

एचडीएल यानी अच्छा कोलेस्ट्रॉल। जितना ज्यादा एचडीएल, उतना ही स्वस्थ दिल। इसका कम होना मोटापे व हृदय रोगों की आशंका को बढ़ा देता है। एचडीएल में सुधार करना है तो स्वस्थ जीवनशैली पर जोर देना जरूरी है।

पैदल चलें

पैदल चलना, जॉगिंग करना या साइकिल चलाना कोई भी ऐसा व्यायाम करें, जिससे आपकी हृदयगति तेज हो। एक दिन में व्यायाम के लिए 45 मिनट का समय निकालें। कैसा व्यायाम करते हैं, उसके साथ यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि कितनी देर व्यायाम करते हैं।

वजन रखें नियंत्रित

अगर वजन अधिक है तो वजन कम करने पर जोर दें। खासकर पेट के निचले हिस्से में जमा वसा को कम करने पर ध्यान दें। महिलाओं में 80 सेमी. और पुरुषों में 90 सेमी. से अधिक कमर का होना संकेत है कि वजन कम करना जरूरी है।

धूम्रपान न करें

धूम्रपान का सेवन शरीर में एलडीएल यानी हानिकारक कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। एचडीएल काफी कम है तो धूम्रपान छोड़ना जरूरी होगा। तंबाकू उत्पादों का सेवन न करना एचडीएल के स्तर में सुधार करता है।

अच्छी वसा पर ध्यान दें

ट्रांस फैटी एसिड को पूरी तरह ना कहें। हाइड्रोजेनेटेड वनस्पति तेल भी कम खाएं। बाजार में बिकने वाले बिस्कुट व बेकरी प्रोडक्ट, पीनट बटर और बाजार में बिकने वाली तली चीजों में इसका इस्तेमाल होता है।

इसकी जगह मोनोसेचुरेटेड फैट्स खाएं। इसमें सरसों का तेल, जैतून का तेल, मूंगफली का तेल, एवोकाडो व कैनोला ऑयल आदि को शामिल किया जाता है। घर में खाना बनाते समय इन तेलों को कुछ समय पर बदलते रहें। हफ्ते में दो या तीन बार मछली खाना ओमेगा-3 फैट्स के स्तर को बढ़ा देता है। बादाम, अखरोट, पिस्ता के अलावा सीताफल, तरबूज, मेथी, अलसी आदि के बीज खाना भी अच्छा रहता है।

फाइबर खाएं

ओट्स व चोकर समेत अन्य साबुत अनाज, सेब, अंगूर, खट्टे फल, सब्जियां, बींस और मेथी दाने में भरपूर फाइबर होता है। अच्छे नतीजों के लिए एक दिन में दो से तीन चीजों को अवश्य शामिल करें।

सोयाबीन भी कर सकते हैं शामिल

हालांकि इस संबंध में अभी भी बहस जारी है और शोध कार्य चल रहे हैं, लेकिन कुछ शोधों के अनुसार एक दिन में 25 ग्राम सोया प्रोटीन लेना एचडीएल के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

डेयरी प्रोडक्ट्स भी लें

कई बार वजन कम करने की प्रक्रिया में डॉक्टर पूरी तरह डेयरी उत्पादों को खाने के लिए मना करते हैं।

ऐसा दूध में उच्च वसा की मौजूदगी के कारण होता है।

पर शोध कहते हैं कि गाय के दूध में मौजूद कुछ तत्व हानिकर कोलेस्ट्रॉल एलडीएल व ट्रीग्लिसराइड्स को कम करने में मदद करते हैं। स्किम्ड मिल्क और टोंड दूध लेना अच्छे विकल्प हैं।

खराब पोषण तो घेर लेगी बीमारियां

खून की कमी

एनीमियाग्रस्त व्यक्ति को खून की कमी होती है। यह तब होता है जब शरीर में रक्त के लाल कणों या कोशिकाओं के नष्ट होने की दर, अनके निर्माण की दर से अधिक होती है। चूँकि महिलाएं प्रतिमास आपनी माहवारी के माध्यम से खून गंवाती है, इसलिए किशोरावस्था तथा रजोनिवृति के बीच की आयु की महिलाओं को एनीमिया सबसे अधिक होता है। संसार की गर्भवती महिलाओं में से 50% से भी अधिक एनीमिया से पीड़ित होती हैं क्योंकि उन्हें गर्भ में बढ़ते हुए शिशु के लिए भी रक्त निर्माण करना पड़ता है। एनीमिया एक गंभीर बीमारी है। इसके कारण महिला को अन्य बीमरियों होने की संभावना भी बढ़ जाती है। यह महिला की कार्यक्षमता व सीखने की क्षमता पर भी बुरा प्रभाव डालती है। एनिमियाग्रस्त महिलाओं की प्रसव के दौरान रक्त स्त्राव तथा मरने की संभवना काफी अधिक होती है।

लक्षण: त्वचा का सफ़ेद दिखाना, जीभ, नाखूनों व पलकों के अंदर सफेदी (रक्तहीनता) का आभास होना। चक्कर आना विशेषकर लेटी व बैठी स्थिति में उठने पर। बेहोश होना। सांस फूलना। हृदय गति का तेज होना ।

एनीमिया के कारण

एनीमिया का सबसे प्रमुख कारण हिया लौह तत्व युक्त खाद्य पदार्थों का पर्याप्त मात्रा में न खाना क्योंकि लाल रक्त कणों के निर्माण के लये लौह तत्व की आवश्यकता होती है । इसके अन्य कारण हैं : मलेरिया, जिसमें लाल रक्त कण नष्ट हो जाते हैं। बार-बार गर्भधारण करना। किसी भी कारण रक्त का नुकसान, जैसे कि-माहवारी में अधिक मात्रा में खून जाना (कॉपर टी या अन्त: गर्भस्थ साधन (आइ0यू0डी0) के कारण माहवारी भारी हो सकती है)।

प्रसव: पेट के कीड़ों पर परजीवियों के कारण खुनी दस्त लगना। पेट के अल्सरों से खून जाना। किसी जख्म से अधिक खून जाना।

उपचार व रोकथाम

- ❖ यदि मलेरिया, परजीवी या कीड़ों के कारण एनीमिया है तो पहले इनका उपचार करें ।
- ❖ अधिक लौह तत्व युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करें और उनके साथ विटामिन 'ए' व 'सी' समृद्ध खाद्य पदार्थ खायें क्योंकि ये शरीर में लौह तत्व के शोषण में वृधि करते है।
- ❖ खट्टे फल व टमाटर विटामिन 'सी' के अच्छे स्त्रोत हैं। गहरे पीले व गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्जियों में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है।
- ❖ अगर कोई महिला पर्याप्त मात्रा में लौह तत्व युक्त खाद्य पदार्थ नहीं खा सकती है तो उसे लौह तत्व की गोलियां खानी पड़ेगी।
- ❖ काली चाय या कॉफ़ी पीने तथा अन्नों की बाहरी परत (चोकर) खाने से परहेज करें। ये शरीर में लौह तत्व के शोषण को कम करती है।
- ❖ परजीवीयों के संक्रमण से बचाव के लिए स्वच्छ पेय जल ही पीयें।
- ❖ स्वच्छ शौचालय का प्रयोग करें ताकि कीड़ों के अंडे (जो शौच में हो सकते हैं) भोजन पानी के स्त्रोंतों में न फैलें। यदि आपके क्षेत्र में हुकवर्म काफी प्रचुर है तो नंगे पैर खेतों, जमीन पर न चलें।
- ❖ बच्चों के जन्म के बीच कम से कम 2 वर्ष का अंतर रखें। ऐसा करने से दो गर्भों के बीच आपका शरीर लौह तत्व का कुछ भंडारण कर पाएगा।

चूँकि लडकियों तथा महिलाओं को आवश्यकता से कम भोजन या यूँ कहिए कि कम पौष्टिक भोजन मिलता है, इसलिए उनके बीमार पड़ने की संभावना अधिक होती है। नीचे कुछ ऐसी बिमारियों का वर्णन किया जा रहा है तो ख़राब पोषण के कारण होती है।

बेरी-बेरी रोग

यह रोग थायमिन (एक प्रकार का विटामिन 'बी') की कमी के कारण होता है । थायमिन एक विटामिन है जो भोजन को उर्जा में परिवर्तित करने में सहायता करता है। एनीमिया की तरह यह रोग भी महिलाओं में किशोरवस्था से लेकर रजोनिवृति के बीच की उम्र में अरु उनके बच्चों को होता है। बेरी-बेरी होने की संभवना सर्वाधिक तब होती है जब भोजन में मुख्य खाद्य इस प्रकार का होता है जिसमें से उसकी बाहरी सतह (उदाहरण तया पॉलिश किया हुआ चावल) निकाल ली गई हो या ऐसा कंदमूल जिसमें स्टार्च की मात्रा काफी अधिक हो (जैसे कि-टेपिओका)।

लक्षण: भूख न लगना, खाने की इच्छा नहीं होना। भयंकर कमजोरी, विशेषकर पैरों में। शरीर पर सूजन आ जाना या दिल काम करना बंद कर देता है जिससे अचानक मृत्यु हो सकती है।

उपचार व रोकथाम

ऐसे खाद्य पदार्थ खायें जिनमें थायमिन अधिक होता है जैसे कि संपूर्ण अन्न, दालें (मटर, फलियां), दूध व अंडा। अगर ये सब खाना संभव नहीं है तो रोगी को थायमिन की गोलियां खानी पड़ेंगी।

हैप्पी ओल्ड एज के स्मार्ट टिप्स

'जियो और जीने दो' के सिध्दांत को स्थापित रखने का प्रयास करें। जीवन के हर क्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सतर्क रहें। आवश्यक चैकअप समय-समय पर कराते रहें। जहां तक संभव हो प्रौढ़ावस्था में ही अपनी वृध्दावस्था की तैयारी आरंभ कर दें। अपना बैंक-बैलेंस और आभूषणों को भविष्य में आने वाले समय के लिए सुरक्षित रखें। अपना सब कुछ बांटने और देने की भूल, भूलकर भी न करें। व्यस्त और सक्रिय रहने का प्रयास करें। इसके लिए नियमित रूप से समय के साथ स्वयं में भी बदलाव लाने का प्रयास करें। संतुलित और पौष्टिक भोजन का सेवन करें। आपका स्वभाव जितना अच्छा होगा, उतना ही आपका बुढ़ापा अच्छा कटेगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें। युवा पीढ़ी से ही नहीं, बल्कि किसी अन्य से भी अधिक उम्मीदें कभी न रखें। नौकरी से अवकाश के उपरांत घर पर व्यर्थ न बैठें और न ही आत्मकेन्द्रित बनें, बल्कि समाज व सामाजिक कार्यों के प्रति अपना सक्रिय योगदान दें। आज की आधुनिक जीवनशैली में बहुत आवश्यक है आपका समय के साथ चलना, इसलिए समय के साथ-साथ स्वयं में भी बदलाव लाने का प्रयास करें। दूसरे के काम आने का प्रयास करें, इससे आपको भी आत्मसंतुष्टि मिलेगी और दूसरे भी आपसे खुश रहेंगे। इस अवस्था में आप अपनी रुचि व इच्छा के वे सभी कार्य करें, जो आप अपने घर-परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए न कर सके थे। नकारात्मक विचारों को मन में स्थान न दें। सकारात्मक सोच के साथ जीवन के हर सुख-दु:ख को जीने का प्रयास करें। स्वयं में आत्मबल का विकास करें। हर विपरीत परिस्थिति में अपना संयम न खोयें, बल्कि धैर्य और शान्ति से बुरे समय के निकल जाने का इन्तजार करें।

रतौंधी रोग

यह आंखों की एक बीमारी है जो आम तौर पर दो से पांच वर्ष की आयु के बच्चों में सर्वाधिक होती है लेकिन वयस्कों में भी हो सकती है। यह विटामिन 'ए' की कमी के कारण होती है और गहरे पीले व गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्जियों, फलों व अन्य ऐसे खाद्य पदार्थों के पर्याप्त मात्रा में सेवन न करने के कारण होती है जिनमें विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अगर लक्षणों की जल्दी पहचान करके समय पर इसका उपचार न कराया जाए तो अंधापन भी हो सकता है।

लक्षण: सबसे पहले, रतौंधी से पीड़ित महिला, कम रोशनी या हल्के अंधेरे में (जैसे कि शाम के समय), अन्य लोगों की तरह अच्छी तरह से नहीं देख पाती है। अगर उसे उपचार न मिले तो उसकी आंखों में सूखापन होने लगता है। आंखों के सफ़ेद हिस्से में सामान्य चमक कम होने लगती है और वहां सिलवटें पड़ने लगती है। आंखों में बिटाट स्पॉट्स बन जाते हैं। कोर्निया (पुतली के ऊपर पारदर्शी भाग) में सूखापन आने लगता है और वहां सूक्ष्म गड्ढे बनने लगते हैं। तत्पश्चात कोर्निया नरम होकर या तो जगह जगह से उभरने लगता है या वह फट भी सकता है। इस क्रिया में आंख में कोई दर्द नहीं होता है। संक्रमण, कोर्निया में सफेदी बनने या अन्य समस्या से अंधापन हो सकता है।

उपचार व रोकथाम

- ❖ भोजन में गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्जियां (जैसे कि पलक, मेथी आदि) तथा पीले या लाल फल व सब्जियां (जैसे की गाजर, पपीता, आम आदि) जरुर खायें।
- ❖ दूध, अंडा, जिगर, व गुर्दे भी विटामिन 'ए' के अच्छे स्त्रोत हैं। इनके खाने से भी विटामिन 'ए' की कमी की रोकथाम होती है।
- ❖ अगर आप किसी कारण से उपर बताये गए खाद्य पदार्थ खाने में असमर्थ हैं तो आपको विटामिन 'ए' के कैप्सूल लेने होंगे। जो महिला ठीक से भोजन खाती है, उसे सारे विटामिन प्राप्त हो जाते हैं। विटामिनों की गोलियां, इंजेक्शन, शर्बत या टॉनिक लेने से बेहतर है कि ठीक से भोजन खाया जाए। कभी-कभी पौष्टिक भोजन आसानी से उपलब्ध नहीं होता है। अगर कोई महिला पहले से ही कुपोषित है तो उसे यथासंभव मात्रा में भोजन खाना चाहिए और साथ में विटामिन की गोलियां भी खानी चाहिए। विटामिन की गोलियां, सुईयों की तुलना में, उतनी असरदार परंतु अधिक सस्ती व हानिकारक होती है। विटामिन की सुईयां कभी न लें। उन्हें खाने ही बेहतर है हो सके तो पौष्टिक भोजन के रूप में।

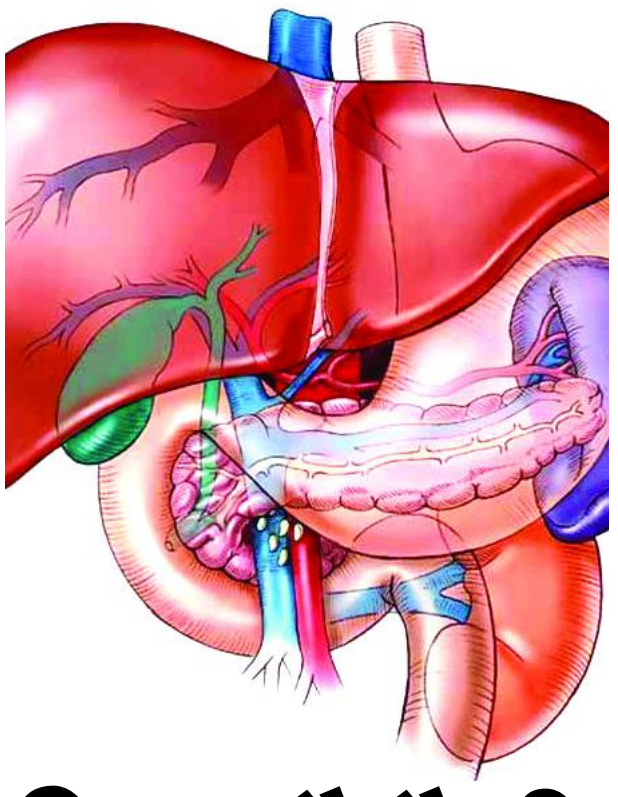

लिवर है फैटी तो ये जरूर खाएं ये चीजें

फैटी लिवर और आंतों से जुड़े रोगों में गहरा संबंध है। शरीर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालने के लिए सही आहार पर ध्यान देना बेहद जरूरी है। विटामिन बी और सी युक्त चीजें लिवर को खास फायदा पहुंचाती हैं। प्रोबायोटिक्स शरीर में जमा विषाक्त तत्वों को बाहर निकालने में सहायक हैं। शहद, दही, योगर्ट अधिक खाएं। बाजार में प्रोबायोटिक युक्त ब्रेड, दूध व दही व सप्लिमेंट्स भी मिलते हैं। विटीमिन बी और सी युक्त चीजें खाएं। ये दोनों तत्व रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं और शरीर पर टॉक्सिन्स के असर को कम करते हैं। विटामिन बी कॉम्प्लेक्स लिवर को ठीक रखता है। सुबह के नाश्ते में मोटापा बढ़ाने वाले तत्व कम और फाइबरयुक्त चीजें अधिक लें।

आहार में दालें, चोकरयुक्त आटे से बनी चीजें, अंकुरित अनाज व दलिया खाएं। दिन में दो-तीन बार डैंडेलाइन टी पिएं। यह शरीर से पित्त का असर कम करती है। कच्ची सब्जियों व फलों का सेवन लिवर को फायदा पहुंचाता है। खासतौर पर हरे, नारंगी, पीले, बैंगनी और लाल रंग के फल व सब्जियां खाएं। गाजर, मूली, चुकंदर लिवर के लिए अच्छे हैं।

खूब पानी पिएं।

नीबू पानी, नारियल पानी, बेल शरबत व जूस पियें। ये पेय पदार्थ लिवर को ताकत देते हैं। लिवर में बनने वाले पित्त को काबू में रखने के लिए कड़वी पत्तियों मसलन सिंहपर्णी, चिकोरी आदि को सलाद के तौर पर खाएं। करेला भी फायदेमंद होता है। टूना, सरडाइन मछली के अलावा मूंगफली, सनफ्लावर, बादाम, तिल आदि का इस्तेमाल करें। सीताफल के बीज, फली वाली सब्जियां, मटर, दाल व बीन्स खाएं।

फायदेमंद हैं जड़ी-बूटियां और मसाले

नियमित 5-6 ग्राम सौंफ खाएं। हल्दी और भृंगराज एल्कोहल व अन्य विषैले पदार्थों के असर को कम करने में मदद करते हैं। काली मिर्च का सेवन एसिडिटी के विकार को कम करता है। एसिडिटी लिवर को नुकसान पहुंचाती है।

ओलंपिक में रजत के बाद लुसाने डाइमंड लीग के लिए तैयार नीरज, मुकाबला आज

एजेंसी ▸▸ लुसाने

पेरिस ओलंपिक में ऐतिहासिक रजत पदक जीतने के दो हफ्ते बाद स्टार भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा गुरुवार को लुसाने डाइमंड लीग मीट में फिर भाग लेंगे और अगले महीने सत्रांत डाइमंड लीग ट्रॉफी को फिर से हासिल करने की कोशिश करेंगे।

लंबे समय से ग्रोइन की चोट से जूझ रहे नीरज ने आठ अगस्त को पेरिस ओलंपिक में 89.45 मीटर के थ्रो के साथ रजत पदक जीता था। उन्होंने तीन साल पहले टोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक अपने नाम किया था। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता 26 साल के नीरज ने शनिवार को लुसाने में डायमंड लीग प्रतियोगिता में हिस्सा लेने की पुष्टि की थी जिसके कारण अब उनकी सर्जरी पर फैसला सत्र की समाप्ति के बाद होगा।

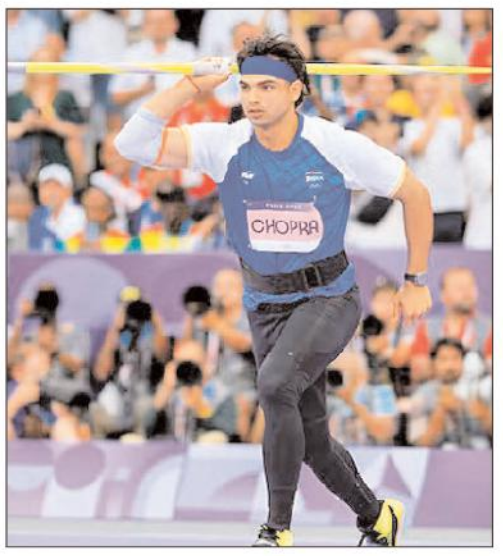

पेरिस के शीर्ष खिलाड़ी देंगे चुनौती

नीरज का मुकाबला लुसाने में शीर्ष खिलाड़ियों से होगा जिसमें पेरिस ओलंपिक फाइनल में शीर्ष छह में जगह बनाने वाले पांच खिलाड़ी भी शामिल हैं। टोक्यो में रजत पदक जीतने के बाद पेरिस में 88.50 मीटर के थ्रो के साथ चौथे स्थान पर रहने वाले वाडलेच डाइमंड लीग खिताब को बचाने के लिए बेहतर प्रदर्शन करना चाहेंगे। दो बार के विश्व चैंपियन ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स ने पिछले सत्र के खराब प्रदर्शन के बाद अच्छा प्रदर्शन किया है और वह लंबे थ्रो करने में सक्षम हैं। उन्होंने पेरिस ओलंपिक में 88.54 मीटर के साथ कांस्य पदक जीता था और वह अपने करियर में पहले ही 90 मीटर का आंकड़ा पार कर चुके हैं।

14 को होगा लीग फाइनल

नीरज 2022 में डाइमंड लीग चैंपियन थे और पिछले साल अमेरिका के यूजीन में 'विनर-टेक-ऑल' डाइमंड लीग फाइनल में चेक गणराज्य के याकूब वाडलेच के बाद दूसरे स्थान पर रहे थे। मौजूदा सत्र का डाइमंड लीग फाइनल 14 सितंबर को ब्रुसेल्स में होगा। फाइनल के लिए क्वालीफाई करने के लिए उन्हें डाइमंड लीग मीटिंग सीरीज तालिका में शीर्ष छह में रहना होगा। पांच सितंबर को ज्यूरिख में एक और डाइमंड लीग प्रतियोगिता होनी है जिसमें पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा भी शामिल है। दस मई को दोहा डाइमंड लीग में वाडलेच के बाद दूसरे स्थान पर रहने से वह सात अंक के साथ चौथे स्थान पर हैं।

अंतिल की अगुवाई में पहला जत्था पेरिस रवाना

नई दिल्ली। पांच स्वर्ण सहित एक दर्जन पदक जीतने की उम्मीद के साथ भारत के पैरालंपिक एथलीटों का पहला जत्था स्टार भाला फेंक खिलाड़ी सुमित अंतिल की अगुआई में पेरिस पैरालंपिक के लिए रवाना हो गया है। परिस्थितियों के अनुकूल खुद को ढालने के लिए पैरालंपिक खिलाड़ी समय से पहले रवाना हुए हैं। देश के 16 पैरा एथलीट उद्घाटन समारोह से तीन दिन पहले 25 अगस्त को खेल गांव में प्रवेश करेंगे और उससे पहले कुछ दिन पेरिस के होटलों में रुकेंगे। पैरा एथलेटिक्स स्पर्धाएं 30 अगस्त से पैरालंपिक के समापन दिवस आठ सितंबर तक 'स्टेड डी फ्रांस' में आयोजित की जाएंगी।

खबर संक्षेप

श्रीजेश को दो करोड़ रुपए देगी केरल सरकार

तिरुवनंतपुरम। केरल सरकार ने बुधवार को भारतीय हॉकी के दिग्गज गोलकीपर और पेरिस ओलंपिक में टीम को लगातार दूसरा पदक दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले पीआर श्रीजेश के लिए दो करोड़ रुपए के नकद पुरस्कार की घोषणा की। मुख्यमंत्री कार्यालय के बयान के अनुसार मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक में इस संबंध में निर्णय लिया गया। इसमें कहा गया, 'पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के सदस्य रहे पी आर श्रीजेश को दो करोड़ रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।'

सुपरस्टार्स ने छह विकेट से जीता मैच

नई दिल्ली। प्रियांश आर्य की 51 गेंदों में 82 रन की शानदार पारी की बदौलत साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स ने यहां दिल्ली प्रीमियर लीग क्रिकेट टूर्नामेंट में सेंट्रल दिल्ली किंग्स को छह विकेट से हराया। सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने मंगलवार को खेले गए मैच में पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद ध्रुव कौशिक (56) और यश ढुल (52) के अर्धशतकों की मदद से सात विकेट पर 176 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स ने हालांकि आर्य और आयुष बडोनी (42) के बीच 101 रन की साझेदारी की बदौलत चार विकेट पर 177 रन बनाकर पांच गेंद शेष रहते लक्ष्य हासिल कर दिया।

शरत कमल की नजर प्रशासनिक भूमिका पर

चेन्नई। अचंता शरत कमल भले ही अपना आखिरी ओलंपिक खेल चुके हों लेकिन टेबल टेनिस का यह दिग्गज भारतीय खिलाड़ी प्रशासक के रूप में खेल से जुड़े रहना चाहता है और इसको लेकर वह जल्द ही खेल के शीर्ष अधिकारियों से मिलेंगे। कमल ने बुधवार को यहां अल्टीमेट टेबल टेनिस के लॉन्च के अवसर पर कहा, 'अभी तक स्पष्ट रूप से तय नहीं किया है कि मेरा आगे का रोडमैप क्या होगा।

यूटीटी से महिला खिलाड़ियों को हुआ फायदा

चेन्नई। देश की चोटी की महिला खिलाड़ी मनिका बत्रा का मानना है कि अल्टीमेट टेबल टेनिस से भारतीय खिलाड़ियों विशेषकर महिला खिलाड़ियों को काफी फायदा हुआ। मनिका और श्रीजा अकुला हाल ही में पेरिस में ओलंपिक एकल के प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी बनी थी। मनिका ने बुधवार को यहां संवाददाताओं से कहा, 'मुझे निजी तौर पर इससे काफी मदद मिली क्योंकि विभिन्न देशों के खिलाड़ी यूटीटी में खेलते हैं।

भारी उथल-पुथल और हिंसा को देखते हुए आईसीसी ने किया फैसला

बांग्लादेश से छिनी महिला टी20 विश्व कप की मेजबानी, यूएई में होगा टूर्नामेंट

एजेंसी ▸▸ दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने महिला टी20 विश्व कप की मेजबानी मंगलवार को बांग्लादेश से छीन ली है। तीन से 20 अक्टूबर तक होने वाला यह वैश्विक टूर्नामेंट अब संयुक्त अरब अमीरात में खेला जाएगा। क्रिकेट की वैश्विक संस्था ने यह फैसला बांग्लादेश में भारी उथल-पुथल और हिंसा को देखते हुए लिया है। मालूम हो कि पिछले कुछ महीनों से बांग्लादेश में अराजकता की स्थिति बनी हुई है जिस कारण पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीन को अपना पद और देश छोड़ना पड़ा था।

बांग्लादेश की घटनाओं को देखते हुए ऑस्ट्रेलिया, भारत, न्यूजीलैंड और इंग्लैंड ने अपने नागरिकों को बांग्लादेश की यात्रा न करने की सलाह जारी की थी। महिला टी20 विश्व कप के मुकाबले अब दुबई और शारजाह में खेले जाएंगे। आईसीसी के मुख्य कार्यकारी जियोफ एलार्डिस ने कहा, बांग्लादेश में महिला टी20 विश्व कप का आयोजन नहीं करना शर्म की बात है क्योंकि हम जानते हैं कि बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड एक यादगार आयोजन करता। मैं बीसीबी की टीम को बांग्लादेश में इस आयोजन को सक्षम बनाने के लिए सभी प्रयास करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। हालांकि इसमें भाग लेने वाली सभी टीमों की सरकारों द्वारा यात्रा सलाह जारी करने का मतलब था कि इस टूर्नामेंट का आयोजन वहां संभव नहीं था। हालांकि उनके पास मेजबानी के अधिकार बने रहेंगे। हम निकट भविष्य में बांग्लादेश में एक वैश्विक टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए उत्सुक हैं।

10 टीमें टी-20 वर्ल्ड कप में लेंगी हिस्सा

बांग्लादेश में विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप 3 से 20 अक्टूबर तक खेला जाना था। इस वर्ल्ड कप में 10 टीमें हिस्सा लेंगी। 18 दिनों में 23 मैच आयोजित किए जाएंगे। भारत ग्रुप ए में 6 बार की चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के साथ है। इसके अलावा इस ग्रुप में पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और क्वालिफायर से आई एक टीम शामिल है। वहीं मेजबान बांग्लादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और क्वालिफायर-2 टीम ग्रुप बी में है। इस ग्रुप के सभी मैच ढाका में खेले जाएंगे।

बीसीसीआई ने खारिज किया था प्रस्ताव

आईसीसी ने बीसीसीआई से टूर्नामेंट होस्ट करने के लिए प्रस्ताव दिया था, लेकिन भारतीय बार्ड ने आईसीसी के प्रस्ताव यह कहकर खारिज कर दिया था कि हम यह संकेत नहीं देना चाहते हैं कि हम लगातार अपने ही घर में वर्ल्ड कप कराना चाहते हैं। बीसीसीआई के सेक्रेटरी जय शाह ने बताया था कि भारत अगले साल 2025 में विमेंस वनडे वर्ल्ड कप की मेजबानी करने जा रहा है।

टॉप दो टीमें खेलेंगी सेमीफाइनल

सेमीफाइनल में दोनों ग्रुप की टॉप दो टीमें पहुंचेंगी। पहला सेमीफाइनल 17 अक्टूबर को सिलहट में और दूसरा सेमीफाइनल 18 अक्टूबर को ढाका में खेला जाएगा। वहीं 20 अक्टूबर को फाइनल ढाका में ही खेला जाएगा।

कुश्ती

रौनक ने अंडर-17 विश्व चैंपियनशिप में जीता कांस्य

एजेंसी ▸▸ अम्मान

भारत के रौनक दहिया ने यहां चल रही अंडर-17 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में ग्रीको रोमन शैली के 110 किग्रा भार वर्ग में कांस्य पदक जीता।

अपने आयु वर्ग की रैंकिंग में दूसरे नंबर पर काबिज रौनक ने कांस्य पदक के प्लेऑफ में तुर्की के इमरुल्लाह कैपकन को आसानी से 6-1 से हराया। यह मौजूद चैंपियनशिप में भारत का पहला पदक है। इससे पहले रौनक सेमीफाइनल में हंगरी के रजत पदक विजेता ज़ोल्टन कज़ाको से हार गए थे। भारत के पास 51 किग्रा रेपेचेज में दूसरा पदक जीतने का मौका है लेकिन इसके लिए साईनाथ पारधी को दो मुकाबले जीतने होंगे।

उनका पहला मुकाबला अमेरिका के डोमिनिक माइकल मुनारेटो से होगा। अगर वह यह मुकाबला जीत जाते हैं तो उन्हें कांस्य पदक के लिए आर्मेनिया के सर्गिस हारुत्युनन और जॉर्जिया के इउरी चैपिडेज़ के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ना होगा।

एंड्रीवा ने शीर्ष वरीयता प्राप्त कोलिन्स को हराया

मॉन्टेरी। एरिका एंड्रीवा ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करते हुए शीर्ष वरीयता प्राप्त डेनिएल कोलिन्स को हराकर मॉन्टेरी डब्लूटीए 500 हार्डकोर्ट टेनिस प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। एंड्रीवा ने देर रात तक चले इस मैच में 1-6, 6-3, 6-3 से जीत दर्ज की। यह पहला अवसर है जबकि उन्होंने विश्व रैंकिंग में शीर्ष 20 में शामिल किसी खिलाड़ी को हराया। यही नहीं वह पहली बार किसी शीर्ष स्तरीय डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंची हैं। इससे पहले छठी वरीयता प्राप्त लिंडा नोस्कोवा ने कजाकिस्तान की अन्ना डेनिलिना पर 49 मिनट में 6-0, 6-1 से जीत दर्ज की। चेक गणराज्य की इस 19 वर्षीय खिलाड़ी का अगला मुकाबला चीन की वांग जियू या जर्मनी की तात्जाना मारिया से होगा।

बांग्लादेश का टेस्ट खराब

24 साल पहले डेब्यू अब तक 105 मैच हारे

एजेंसी ▸▸ मुंबई

नई दिल्ली। बांग्लादेश टीम अब तक टेस्ट क्रिकेट में भारत को हरा नहीं सकी है। बता दें कि इस बांग्लादेश टीम का टेस्ट इतिहास भी भारत से ही शुरू हुआ है। यानि इस टीम ने टेस्ट डेब्यू मैच भारत के खिलाफ ही खेला था। यह मुकाबला 10 नवंबर 2000 को खेला गया था। इसके बाद से अब तक करीब 24 साल हो गए हैं, लेकिन बांग्लादेश टेस्ट टीम में बिल्कुल भी सुधार और डेवलपमेंट नजर नहीं आया है। टीम की हालत पलती ही नजर आ रही है। इसका उदाहरण बांग्लादेश टीम के टेस्ट आंकड़ों से समझ सकते हैं। भारतीय टीम के खिलाफ बांग्लादेश टीम बेहद कमजोर है। दोनों टीमों के बीच अब तक 13 टेस्ट मैच खेले गए, जिसमें से भारतीय टीम ने 11 जीते हैं। जबकि 2 ड्रॉ हुए हैं।

5 साल बाद जीता पहला मैच

बांग्लादेश ने डेब्यू के 5 साल बाद अपना पहला टेस्ट जीता था। उनसे जनवरी 2005 में जिम्बाब्वे को घरेलू टेस्ट में हराया था। बांग्लादेश ने अब तक टेस्ट इतिहास में जिम्बाब्वे के अलावा वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, आयरलैंड और अफगानिस्तान को हराया है। यानी कि बांग्लादेश टीम अब तक साउथ अफ्रीका, पाकिस्तान और भारत को टेस्ट क्रिकेट में हरा नहीं सकी है।

सिर्फ 19 मैच जीते

बांग्लादेश टीम ने अब तक कुल 142 टेस्ट मैच खेले, जिसमें से सिर्फ 19 ही जीते हैं। जबकि 105 मैचों में उसे हार मिली। 18 मुकाबले ड्रॉ हुए हैं। इसी दौरान (10 नवंबर 2000 से) भारत ने 246 टेस्ट खेले, जिसमें से 117 जीते हैं।

बांग्लादेश का भारत दौरा

दिनांक	प्रारूप	स्थान
19 से 23 सितंबर	टेस्ट	चेन्नई
27 सि. से 1 अक्टूबर	टेस्ट	कानपुर
6 अक्टूबर	टी20	ग्वालियर
9 अक्टूबर	टी20	दिल्ली
12 अक्टूबर	टी20	हैदराबाद

रूस के नेपोमनियाचची से गुकेश ने खेला ड्रा

सेंट लुई। विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने सिंकफील्ड कप शतरंज टूर्नामेंट के दूसरे दौर में रूस के इयान नेपोमनियाचची के साथ रोमांचक ड्रॉ खेला जिससे वह संयुक्त दूसरे स्थान पर बने हुए हैं। अपनी पहली बाजी में मौजूदा विश्व चैंपियन चीन के डिंग लिरेन के साथ अपेक्षाकृत आसान ड्रा खेलने के बाद गुकेश में मंगलवार को यहां नेपोमनियाचची के खिलाफ रोमांचक मुकाबला खेला। भारतीय खिलाड़ी सफेद मोहरों से खेल रहा था और वह कुछ बेहतर स्थिति में भी दिख रहा था लेकिन रूस के खिलाड़ी ने उन्हें कोई मौका नहीं दिया। दोनों खिलाड़ी 60 चाल के बाद ड्रॉ पर सहमत हो गए। भारत के एक अन्य खिलाड़ी आर प्रज्ञाननंदा ने फ्रांस के मैक्सिम वाचिएर लाग्रेव के साथ ड्रा खेला। भारतीय खिलाड़ी काले मोहरों से खेल रहा था लेकिन वह फ्रांस के खिलाड़ी के खिलाफ कोई मौका नहीं बना पाया। मोहरों की नियमित अदला बदली के बाद दोनों खिलाड़ी अंक बांटने पर सहमत हो गए। दूसरे दौर में पांचों बाजियां ड्रॉ रही। इस तरह से फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा 1.5 अंक लेकर शीर्ष पर बने हुए हैं।

सतीश जापान ओपन के प्री क्वार्टर में, किरण और युगल जोड़ियां हारीं

एजेंसी ▸▸ योकोहामा

भारत के बैडमिंटन खिलाड़ी सतीश कुमार करुणाकरन ने बुधवार को यहां पहले दौर में डेनमार्क के एंडर्स एंटोनसन के मैच के बीच में चोटिल होने के कारण हटने पर जापान ओपन के पुरुष एकल के प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

भारत के 23 साल के सतीश जब 6-1 से आगे चल रहे थे तब दुनिया के तीसरे नंबर के खिलाड़ी एंटोनसन ने योकोहामा एरेना में मुकाबले के तीसरे मिनट में ही हटने का फैसला किया। दुनिया के 47वें नंबर के खिलाड़ी सतीश प्री क्वार्टर फाइनल में थाईलैंड के केंटाफोन वैंगचेरोएन से भिड़ेंगे। किरण जॉर्ज को हालांकि इस सुपर 750 टूर्नामेंट के पुरुष एकल के पहले दौर में जापान के केंता सुनेयामा के खिलाफ 19-21, 14-21 से हार का सामना करना पड़ा। सुमित रेड्डी और सिक्की रेड्डी की मिश्रित युगल जोड़ी का भी अभियान खत्म हो गई। यह जोड़ी पहले दौर में डेनमार्क के जेस्पर टॉफ्ट और एमेली मेगलुंड के खिलाफ मुकाबले के बीच से हट गई। महिला युगल में रुतुपर्णा पांडा और श्वेतपर्णा पांडा को भी पहले दौर में जूली फिन इपसेन और माई सुरो की डेनमार्क की जोड़ी के खिलाफ 34 मिनट में 8-21, 14-21 से हार का सामना करना पड़ा।

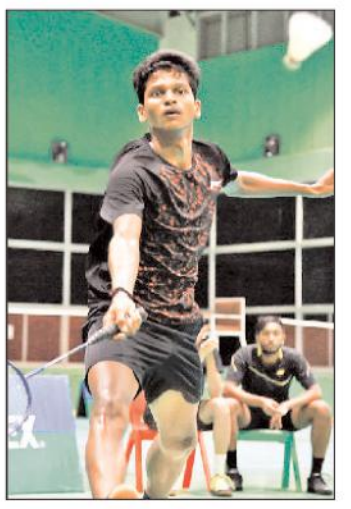

इंटरकॉन्टिनेंटल कप : आशीष और गोलकीपर प्रभुसुखन टीम में शामिल

झिंगन संभावित खिलाड़ियों में नहीं, कियान नया चेहरा

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

सेंटर-बैक संदेश झिंगन को भारत के नए मुख्य कोच मनोलो मार्केज़ ने इंटरकॉन्टिनेंटल कप फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए बुधवार को चुनी गई 26 सदस्यीय संभावित टीम में नहीं लिया है। ईस्ट बंगाल की तरफ से खेलने वाले ईरान के फुटबॉलर जमशेद नासिरी के बेटे और चेन्नईयिन एफसी के फॉरवर्ड कियान नासिरी के रूप में नया चेहरा टीम में शामिल किया गया है।

मोहन बागान एसजी के राइट-बैक आशीष राय और ईस्ट बंगाल के गोलकीपर प्रभुसुखन सिंह गिल को भी तीन से नौ सितंबर तक हैदराबाद में होने वाले तीन देशों के टूर्नामेंट के लिए लगाए जाने वाले शिविर के लिए संभावित टीम में लिया गया है। जनवरी में सीरिया के खिलाफ भारत के एशियाई कप ग्रुप मैच के दौरान डिफेंडर झिंगन के दाहिने घुटने में चोट लगी थी और माना जा रहा है कि वह अभी तक चोट से उबर नहीं पाए हैं। यह 31 वर्षीय सेंट्रल डिफेंडर मई में कुवैत और कतर के खिलाफ फीफा विश्व कप 2026 प्रारंभिक संयुक्त क्वालीफिकेशन राउंड दो के मैचों में भी नहीं खेल पाया था। इंटरकॉन्टिनेंटल कप में भारत के अलावा सीरिया और मॉरीशस की टीम भाग लेंगी। भारत फीफा की नवीनतम विश्व रैंकिंग में 124वें जबकि सीरिया 93वें और मॉरीशस 179वें स्थान पर है। अभ्यास शिविर 31 अगस्त से हैदराबाद में शुरू होगा।

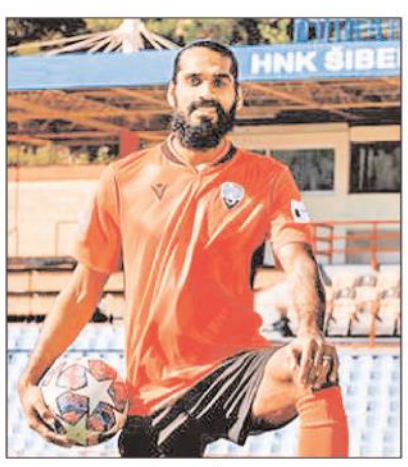

इंटरकांटिनेंटल कप

(सभी मैच शाम 7.30 बजे शुरू होंगे)
3 सितंबर: भारत बनाम मॉरीशस
6 सितंबर: सीरिया बनाम मॉरीशस
9 सितंबर: भारत बनाम सीरिया।

संभावित टीम

गोलकीपर: गुरप्रीत सिंह, अमरिंदर सिंह, प्रभसुखन सिंह गिल। **डिफेंडर:** निखिल पुजारी, राहुल भेके, चिंगलेनसाना सिंह कोनशाम, रोशन सिंह नाओरेम, अनवर अली, जय गुप्ता, आशीष राय, सुभाशीष बोस, मेहताब सिंह।

मिडफील्डर: सुरेश सिंह वांगजम, जेकसन सिंह, नंदकुमार सेकर, नाओरेम महेश सिंह, यासिर मोहम्मद, लालेंगमाविया राल्टे, अनिरुद्ध थापा, सहल अब्दुल समद, लालियानजुआला चांग्ते, लालथाथांगा खावलिंग। **फॉरवर्ड:** कियान नासिरी गिरी, एडमंड लालरिंदिका, मनवीर सिंह, लिस्टन कोलासो।

खबर संक्षेप

रुपया 14 पैसे टूटकर 83.91 प्रति डॉलर पर

मुंबई। विदेशी कोषों की सतत निकासी और स्थानीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच बुधवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 14 पैसे गिरकर 83.91 (अस्थायी) पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि हालांकि, कमजोर अमेरिकी मुद्रा और कच्चे तेल की कीमतों के निचले स्तर ने स्थानीय मुद्रा को निचले स्तर पर सहारा दिया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 83.79 पर खुला ।

सोना स्थिर, चांदी में 150 रुपए की गिरावट

नई दिल्ली। स्थानीय सराफा बाजार में बुधवार को सोने का भाव 74,150 रुपये प्रति 10 ग्राम पर अपरिवर्तित बना रहा। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी है। छिले कारोबारी सत्र में मंगलवार को सोना 1,400 रुपये के उछाल के साथ 74,150 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। हालांकि, चांदी की कीमत 150 रुपये की गिरावट के साथ 87,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई, जबकि इसका पिछला बंद भाव 87,150 रुपये प्रति किलोग्राम था।

हीरो मोटोकॉर्प स्कूटर की नई श्रृंखला पेश करेगी

नई दिल्ली। दोपहिया वाहन बनाने वाली प्रमुख कंपनी हीरो मोटोकॉर्प अपनी स्कूटर श्रृंखला का विस्तार करने और 125 सीसी बाइक खंड में अपनी स्थिति मजबूत करने की तैयारी कर रही है। हीरो मोटोकॉर्प के मुख्य कार्यपालक अधिकारी निरंजन गुप्ता ने कहा कि कंपनी की योजना पेट्रोल और इलेक्ट्रिक, दोनों प्रकार के स्कूटर पेश करने की है। कंपनी 125 सीसी बाइक 'एक्सट्रीम 125आर' की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की भी योजना बना रही है। गुप्ता ने विश्लेषक कॉल में कहा, "स्कूटर के खंड में बड़ा कदम उठाया जाएगा।

जीआरएम ने सलमान को बनाया ब्रांड एंबेसडर

नई दिल्ली। बासमती चावल निर्यातक जीआरएम ओवरसीज ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान को बासमती चावल और गेहूं के आटे के लिए अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया है। जीआरएम ओवरसीज के प्रबंध निदेशक अतुल गर्ग ने कहा कि खान की लोकप्रियता और उनका व्यापक प्रशंसक आधार कंपनी के बासमती चावल की 10X (10गुना) ब्रांड श्रृंखला और गेहूं के आटे की 10X शक्ति श्रृंखला से मेल खाता है। खान ने बयान में कहा, '' मैं जीआरएम के साथ साझेदारी से खुश हूं।

एलएंडटी को महाराष्ट्र में मिला इंफ्रास्ट्रक्चर का बड़ा ठेका

नई दिल्ली। इंजीनियरिंग व निर्माण समूह लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) को महाराष्ट्र में एकीकृत बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक ''बड़ा'' ठेका मिला है। एलएंडटी ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि ठेका एलएंडटी की परिवहन बुनियादी ढांचा इकाई को मिला है। कंपनी ने ठेके के वित्तीय विवरण का खुलासा नहीं किया। हालांकि, वह 2,500 करोड़ रुपये से 5,000 करोड़ रुपये तक के ठेकों को ''बड़ा'' बताती है।

आईटीआर वेरिफिकेशन के लिए बचे सिर्फ 10 दिन, चूके तो फंसेगा रिफंड

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के अनुसार, इस साल 31 जुलाई, 2024 तक लगभग 7.28 करोड़ इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किए गए हैं। इनमें से लगभग 5 करोड़ आईटीआर 26 जुलाई तक फाइल हो चुके थे। बाकी के लगभग 2.28 करोड़ आईटीआर 27 से 31 जुलाई के बीच दाखिल किए गए थे।

ऐसे में नियमों के अनुसार, 26 जुलाई से 31 जुलाई के बीच दाखिल हुए आईटीआर की डेडलाइन भी 26 से 30 अगस्त के बीच पड़ रही है। ऐसे में अगर आपने भी इन तारीखों में आईटीआर फाइल किया था तो अब उसके वेरिफिकेशन के लिए आपके पास सिर्फ 10 दिनों का समय ही बचा है। ऐसे में जुर्माने से बचने के लिए आपको अब देरी नहीं करनी चाहिए।

इस साल 31 जुलाई 2024 तक 7.28 करोड़ आईटीआर फाइल किए गए

आईटीआर-5 जमा करने के लिए 30 दिन का समय

इनकम टैक्स नियमों के अनुसार, आपको आईटीआर फाइल करने के बाद ई-वेरिफिकेशन या आईटीआर-5 ऑफलाइन जमा करने के लिए 30 दिन का समय मिलता है। आईटी डिपार्टमेंट से मिली जानकारी के मुताबिक, 20 अगस्त तक कुल 7,41,37,596 आईटीआर फाइल किए जा चुके हैं। साथ ही 7,09,89,014 आईटीआर वेरीफाई भी किए जा चुके हैं। ऐसे में अभी भी लगभग 32 लाख लोगों को आईटीआर का वेरिफिकेशन नहीं किया है। इसके अलावा 31 जुलाई तक आईटीआर भर चुके लोगों में से भी करीब 19 लाख ने अभी तक आईटीआर वेरीफाई नहीं किया है।

रिफंड चाहिए तो आईटीआर भरने के 30 दिनों के अंदर कर दें वेरिफिकेशन

ऐसे में आपको ध्यान देना होगा कि आईटीआर भरने और ई-वेरिफिकेशन के बीच 30 दिनों से ज्यादा का अंतर न हो। आपका रिफंड तभी आएगा, जब आप आईटीआर वेरीफाई कर देंगे। उदाहरण के तौर पर अगर आपने 31 जुलाई को आईटीआर फाइल किया था तो उसको वेरीफाई करने की आखिरी तारीख भी 30 अगस्त होगी। रिपोर्ट के अनुसार, अगर आपने यह डेडलाइन मिस कर दी तो इसे भी लेट फाइलिंग माना जाएगा। ऐसी स्थिति में आपको जुर्माना भरना पड़ सकता है।

रिफंड तो जाएगा ही 5000 रुपए तक भरना पड़े सकता है जुर्माना

नियमों के अनुसार, अगर आपने 30 दिन के अंदर वेरिफिकेशन नहीं किया तो रिफंड किसी भी सूरत में नहीं आएगा। ऐसे में एक छोटी सी गलती के चलते आपको बड़ा नुकसान झेलना पड़ सकता है। साथ ही आपका आईटीआर भी रद्द हो जाएगा। आपको दोबारा से आईटीआर फाइल करना पड़ेगा और उस पर लेट फाइलिंग का जुर्माना भी देना पड़ेगा। यह गलती आपकी जेब पर 1000 रुपए से 5000 रुपए तक भारी पड़ सकती है।

अमेजन के एक अरब डॉलर के निवेश पर सवाल उठाए

गोयल ने अमेजन के कारोबारी तरीकों निवेश घोषणा पर उठाए गंभीर सवाल

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन की भारत में एक अरब डॉलर के निवेश की घोषणा पर बुधवार को सवाल उठाते हुए कहा कि अमेरिकी कंपनी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए कोई बड़ी सेवा नहीं कर रही है, बल्कि देश में हुए नुकसान की भरपाई कर रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत में अमेजन को हुआ भारी घाटा असल में बाजार बिगाड़ने वाली बेहद कम कीमतों पर उत्पादों की बिक्री के तौर-तरीकों को बयां करता है लेकिन यह भारत के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि इसका असर करोड़ों छोटे खुदरा विक्रेताओं पर पड़ता है।

अमेजन को हुआ भारी घाटा भारत का बाजार बिगाड़ने वाला

अमेरिकी कंपनी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए कोई बड़ी सेवा नहीं कर रही

कारोबारी मॉडल को लेकर सवाल उठाए

उपभोक्ता कल्याण पर ई-कॉमर्स के शुद्ध प्रभाव' पर एक रिपोर्ट जारी करते हुए ई-कॉमर्स कंपनियों के कारोबारी मॉडल को लेकर कई सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा, जब अमेजन भारत में एक अरब डॉलर का निवेश करने की घोषणा करती है तो हम जश्न मनाते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि ये अरबों डॉलर भारतीय अर्थव्यवस्था की बड़ी सेवा या निवेश के लिए नहीं आ रहे हैं।

परंपरागत दुकानों के लिए व्यवधान

केंद्रीय मंत्री ने यह भी कहा कि ई-कॉमर्स कंपनियां छोटे खुदरा विक्रेताओं के अधिक मूल्य और उच्च-मार्जिन वाले उत्पादों को खत्म करती जा रही हैं जबकि छोटी दुकानें इनके दम पर ही जिंदा रहती हैं। मंत्री ने देश में ऑनलाइन खुदरा कारोबार तेजी से बढ़ने पर परंपरागत दुकानों के साथ बड़ा सामाजिक व्यवधान पैदा होने की आशंका भी जताई।

भूमिका पर सोचना जरूरी

हालांकि, मंत्री ने आरोप लगाया कि ये कंपनियां केवल खुद को बी2बी दिखाने के लिए सभी व्यवसायों को एक इकाई के माध्यम से पुनर्निर्देशित करती हैं। उन्होंने कहा, "वे ऐसा कैसे कर रही हैं? क्या यह हमारे लिए चिंता का विषय नहीं होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि ई-कॉमर्स क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में एक भूमिका है, लेकिन उनकी भूमिका के बारे में बेहद सावधानी और सतर्कता से सोचने की जरूरत है।

एक साल में 6000 करोड़ का घाटा

गोयल ने अचरज जताते हुए कहा कि एक साल में 6,000 करोड़ रुपये का घाटा होने से क्या कीमतों को बेहद कम रखने के संकेत नहीं मिल रहे हैं। यह सिर्फ एक ई-कॉमर्स मंच है और उन कंपनियों को सीधे ग्राहकों को बेचने (बी2सी) की अनुमति नहीं होती है। सरकार की स्थापित नीति के मुताबिक, कोई भी ई-कॉमर्स मंच देश में सीधे ग्राहकों के साथ यानी बी2सी कारोबार नहीं कर सकता है।

यूरोप, अमेरिका ने प्रवृति का परिणाम देखा

गोयल ने पश्चिमी देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि यूरोप और अमेरिका ने इस प्रवृत्ति के परिणाम देखे हैं। गोयल ने कहा, "मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि प्रौद्योगिकी अपनी भूमिका निभाएगी। प्रौद्योगिकी सशक्तीकरण, नवाचार, उपभोक्ता जरूरतों को पूरा करने का एक साधन है लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि यह व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़े।"

पूरी दुनिया में कायम हुआ अमूल का दबदबा

ब्रिटेन के ब्रांड फाइनेंस ने दुनिया के मजबूत खाद्य ब्रांड का दर्जा दिया

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

सलाहकार कंपनी 'ब्रांड फाइनेंस' ब्रिटेन ने अमूल को दुनिया के सबसे मजबूत खाद्य ब्रांड का दर्जा दिया है। इसने लगातार चौथे साल दुनिया के सबसे मजबूत डेयरी ब्रांड का खिताब भी बरकरार रखा है। कंपनी ने बयान में कहा, ''दुनिया की अग्रणी ब्रांड परामर्शक ब्रांड फाइनेंस, ब्रिटेन के अनुसार 'फूड एंड ड्रिंक 2024' नामक अपनी वार्षिक रिपोर्ट में अमूल को दुनिया के सबसे मजबूत खाद्य ब्रांड और सबसे मजबूत डेयरी ब्रांड का दर्जा दिया गया है। रिपोर्ट में सबसे मूल्यवान और सबसे मजबूत खाद्य, डेयरी और नॉन-अल्कोहलिक ड्रिंक्स ब्रांड की सूची दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार, अमूल वर्ष 2023 में दूसरे स्थान से बढ़कर वर्ष 2024 में दुनिया का सबसे मजबूत खाद्य ब्रांड बन गया है, जिसका ब्रांड मजबूती इंडेक्स (बीएसआई) स्कोर 100 में से 91 और एएए प्लस रेटिंग है।

36 लाख किसान के लिए गर्व का क्षण

अमूल के प्रबंध निदेशक जयन मेहता ने कहा, ''यह वास्तव में पूरी अमूल टीम और हमारे 36 लाख किसानों के लिए गर्व का क्षण है, जिन्होंने इस ब्रांड को बनाने और विकसित करने में योगदान दिया है।

अमूल सालाना 80 हजार करोड़ रुपए का दूध खरीदती है

हमने हमेशा माना है कि अमूल की धन दूध नहीं, बल्कि विश्वास है, और यह विश्वास ही है, जिसने पिछले 78 वर्षों में उपभोक्ताओं की हर पीढ़ी द्वारा पसंद किए जाने वाले ब्रांड का निर्माण किया है।'' अमूल सालाना 11 अरब लीटर दूध खरीदती है और इसकी कीमत 80,000 करोड़ रुपये (10 अरब डॉलर) है।

शेयर बाजार में तेजी जारी सेंसेक्स 102 अंक चढ़ा

एजेंसी ▸▸| मुंबई

स्थानीय शेयर बाजारों में बुधवार को भी तेजी जारी रही और बीएसई सेंसेक्स 100 अंक से अधिक के लाभ में रहा। घरेलू संस्थागत निवेशकों की मजबूत लिवाली के बीच दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली कंपनियों, टिकाऊ उपभोक्ता सामान और स्वास्थ्य क्षेत्र के शेयरों में लिवाली से बाजार को समर्थन मिला।

- घरेलू संस्थागत निवेशकों की मजबूत खरीदी रही
- एफएमसीजी व स्वास्थ्य क्षेत्र के शेयरों में तेजी आई

कारोबारियों के अनुसार, हालांकि अमेरिका में फेडरल रिजर्व की बैठक का ब्योरा जारी होने से पहले वैश्विक बाजारों में सतर्क रुख के बीच हाल में विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी ने घरेलू बाजार में तेजी पर कुछ अंकुश लगाया। बाजार में कारोबार सीमित दायरे में रहा। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स में लगातार दूसरे दिन तेजी रही और यह 102.44 अंक चढ़कर 80,905.30 अंक पर बंद हुआ। एनएसई निफ्टी में पांचवें दिन तेजी रही और यह 71.35 अंक यानी 0.29 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,770.20 अंक पर बंद हुआ।

टाइटन रही लाभ में

सेंसेक्स की कंपनियों में टाइटन, एशियन पेंट्स, आईटीसी, हिंदुस्तान यूनिलीवर, नेस्ले इंडिया, बजाज फिनसर्व और भारती एयरटेल लाभ में रहीं।

अल्ट्राटेक सीमेंट रहा नुकसान में

इसके उलट, नुकसान में रहने वाले शेयरों में अल्ट्राटेक सीमेंट, टेक महिंद्रा, टाटा स्टील, पावर ग्रिड, एचडीएफसी बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजी, भारतीय स्टेट बैंक और आईसीआईसीआई बैंक शामिल हैं।

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''घरेलू बाजार बढ़त के साथ एक सीमित दायरे में रहा। बाजार को घरेलू संस्थागत निवेशकों के पूंजी प्रवाह से समर्थन मिला। बाजार में जोखिम से निपटने के लिए रक्षात्मक माने जाने क्षेत्रों का प्रदर्शन अच्छा रहा।

कर्ज देने के लिए एलएंडटी फाइनेंस व क्रेड में करार

नई दिल्ली। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी एलएंडटी फाइनेंस लि. ने भुगतान मंच क्रेड के साथ समझौता किया है। यह समझौता क्रेड के सदस्यों को व्यक्तिगत कर्ज उपलब्ध कराने के लिए है। एल एंड टी फाइनेंस ने एक बयान में कहा कि इस साझेदारी से क्रेड सदस्यों को प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों पर आसानी से कर्ज मिल पाएगा। एलएंडटी फाइनेंस लि. अपने कर्ज कारोबार के साझेदार गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी न्यूटैप फाइनेंस प्राइवेट लि. (न्यूटैप) के साथ यह पेशकश करेगी। एलएंडटी फाइनेंस लि. के प्रबंध निदेशक (एमडी) और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सुदीप्त रॉय ने कहा, "हम क्रेड के साथ साझेदारी के साथ उत्साहित हैं।

नई योजना अगले महीने शुरू की जाएगी

चिकित्सा उपकरण उद्योग को बढ़ावा देने जल्द नई योजना

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

घरेलू चिकित्सा उपकरण उद्योग को मजबूत करने के लिए एक नई योजना अगले एक महीने में शुरू की जाएगी। औषध विभाग के सचिव अरुणीश चावला ने बुधवार को कहा कि यह योजना चिकित्सा उपकरण उद्योग के साथ विस्तृत परामर्श के बाद तैयार की जा रही है। चावला ने यहां एक कार्यक्रम में कहा, "यह योजना अगले एक महीने में शुरू की जाएगी। यह हितधारक विचार-विमर्श का हिस्सा थी। इसे उद्योग की जरूरतों के साथ हिसाब से बनाया जा रहा है।" उन्होंने कहा, "नई योजना शुरू करने के लिए हमें वित्त मंत्रालय से सैद्धांतिक मंजूरी मिल चुकी है।"

दूसरे 'मेडिटेक स्टैकथॉन' में भाग लेते हुए सचिव ने कहा कि इस योजना में भविष्य में चिकित्सा उपकरणों पर आयात निर्भरता में कमी लाने की परिकल्पना की गई है।

चिकित्सा उपकरण क्षेत्र बढ़कर 50 अरब डॉलर पहुंचा

पिछले साल अप्रैल में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने घरेलू उत्पादन बढ़ाने और ऐसे उपकरणों के आयात को कम करने के लिए राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण नीति को मंजूरी दी थी। इस नीति से अगले पांच वर्षों में चिकित्सा उपकरण क्षेत्र बढ़कर 50 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज को शेयर बाजार से हटने की मंजूरी

मुंबई। राष्ट्रीय कंपनी विधि प्राधिकरण (एनसीएलटी) की मुंबई पीठ ने आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज के शेयर बाजारों से हटने के आवेदन को बुधवार को मंजूरी दे दी और अल्पांश शेयरधारकों की आपत्तियों को भी खारिज कर दिया।

- एनसीएलटी ने आवेदन को दी मंजूरी

एनसीएलटी ने मौखिक आदेश में आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज के शेयरों की बाजार से हटाने की व्यवस्था योजना को मंजूरी दे दी। व्यवस्था के तहत आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज (आईएसईसी) के शेयरधारकों को उनके प्रत्येक 100 शेयर के बदले आईसीआईसीआई बैंक के 67 शेयर मिलेंगे। अदालत ने अल्पांश शेयरधारकों क्वांटम म्यूचुअल फंड और मनु ऋषि गुप्ता की आपत्तियों को भी खारिज कर दिया।

टाटा मोटर्स का चार्जिंग ढांचे के लिए दो कंपनियों से करार

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

टाटा मोटर्स ने अपने इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहनों (सीवी) के लिए चार्जिंग बुनियादी ढांचा स्थापित करने को डेल्टा इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया और थंडरप्लस सॉल्यूशंस के साथ साझेदारी की बुधवार को घोषणा की।

दोनों पक्षों के बीच इस बारे में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए है। इसके तहत देश भर में इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहनों के लिए 250 नए फास्ट-चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे।

250 नए फास्ट-चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे

टाटा मोटर्स की ओर से जारी बयान के अनुसार, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, पुणे और कोच्चि सहित 50 से अधिक शहरों में रणनीतिक रूप से स्थित ये नए चार्जिंग स्टेशन 540 वाणिज्यिक वाहन चार्जिंग पॉइंट के मौजूदा नेटवर्क को बढ़ाएंगे।

टाटा मोटर्स कमर्शियल व्हीकल्स के उपाध्यक्ष एवं कारोबार प्रमुख (एससीवी एवं पीयू) विनय पाठक ने कहा, वे मार्ग जिनका अधिक इस्तेमाल किया जाता है उन पर उपलब्ध चार्जिंग अवसंरचना का विस्तार करने से अधिक ग्राहक इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहनों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

चार्ज रहने का समय बेहतर होगा

वाहन का चार्ज रहने का समय बेहतर होगा, जिससे राजस्व तथा लाभप्रदता बढ़ेगी, साथ ही यह स्वच्छ व हरित पर्यावरण में योगदान देगा।

दूरसंचार नियामक ने लोगों को सतर्क रहने कहा

ट्राई की तरफ से नहीं की जाती है कोई कॉल

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

दूरसंचार नियामक ट्राई ने बुधवार को लोगों को आगाह किया कि वे ट्राई के नाम पर की जा रहीं फर्जी कॉल के चंगुल में न फंसें। इन कॉल में दूरसंचार ग्राहकों को मोबाइल नंबर का कनेक्शन काटने की धमकी देकर कुछ निजी सूचनाएं देने के लिए कहा जाता है।

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने यह स्पष्ट किया कि वह संदेश भेजकर या किसी अन्य तरीके से मोबाइल नंबर का कनेक्शन काटने के बारे में ग्राहकों के साथ संपर्क नहीं करता है। उसने ऐसा करने के लिए किसी तीसरे पक्ष की एजेंसी को भी अधिकृत नहीं किया है।

ट्राई के नाम पर की जा रही फर्जी कॉल के चुंगल में न फंसे

मोबाइल नंबर काटने की धमकी दी जाती है

ट्राई ने एक बयान में कहा, "ऐसे में किसी भी तरह का संचार (कॉल, संदेश या नोटिस) जो ट्राई से होने का दावा करता है और मोबाइल नंबर काटने की धमकी देता है, उसे संभावित धोखाधड़ी का प्रयास माना जाना चाहिए और इसपर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

कॉल की पुष्टि करने की सलाह

ट्राई ने कहा, ग्राहकों को संबंधित दूरसंचार कंपनी के अधिकृत कॉल सेंटर या ग्राहक सेवा केंद्रों से संपर्क कर ऐसी कॉल की पुष्टि करने की सलाह दी जाती है। नियामक के मुताबिक, उसके संज्ञान में लाया गया है।

झांसे में न आने की सलाह

बिल भुगतान में गड़बड़ी, केवाईसी पूरा न होने या नंबर के दुरुपयोग की स्थिति में ही दूरसंचार सेवा प्रदाता किसी मोबाइल नंबर की सेवाएं बंद कर सकती है। ट्राई ने नागरिकों को सतर्क रहने और संदिग्ध धोखेबाजों के झांसे में न आने की सलाह दी है।

व्यक्तिगत जानकारी मांगी जाती है

नागरिकों को ट्राई से होने का दावा करते हुए तमाम प्री-रिकॉर्डेड कॉल की जा रही हैं, जिनमें उपयोगकर्ताओं को धमकी दी जाती है कि उनके नंबर जल्द ही ब्लॉक कर दिए जाएंगे और उनकी व्यक्तिगत जानकारी मांगी जाती है।

धरती के करीब से गुजरेगा तबाही वाला 'एपोफिस' एस्टेरॉइड, वैज्ञानिक रख रहे नजर

एजेंसी ▶▶ वॉशिंगटन

एस्टेरॉइड एपोफिस पृथ्वी के बहुत करीब से गुजरने जा रहा है, जिसने इसमें वैज्ञानिकों की रूचि बढ़ा दी है। तबाही का देवता कहे जाने वाला एपोफिस 2029 में पृथ्वी के बहुत करीब (20,000 मील की दूरी) पर होगा। इस आकार का एस्टेरॉइड पहली बार धरती के इतने नजदीक से गुजरेगा। 13 अप्रैल, 2029 को एपोफिस पूर्वी गोलार्ध से दिखाई देगा, जिसमें यूरोप, अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के कुछ हिस्से शामिल हैं। यह आकाश में एक चमकीली लकीर के रूप में दिखाई देगा, जो एक तेज गति से चलने वाले तारे जैसा होगा। ये लाखों लोगों को बिना दूरबीन के दिखाई देगा।

क्षुद्रग्रह एपोफिस पांच साल बाद पृथ्वी से केवल 20,000 मील की दूरी से गुजरेगा। इसकी निकटता अंतरिक्ष एजेंसियों को अध्ययन करने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करती है। नासा और ईएसए ने इस घटना का उपयोग ग्रह रक्षा रणनीतियों को आगे बढ़ाने के लिए करने की योजना बनाई है

खास बातें

- पृथ्वी से केवल 20,000 मील की दूरी से गुजरेगा एपोफिस
- नासा के वैज्ञानिकों की टीम की एपोफिस पर नजर
- एपोफिस का आकार है पांच फुटबॉल के मैदानों के बराबर

धरती के लिए खतरा नहीं, एक हजार मेगा टन टीएनटी से अधिक उर्जा पैदा करेगा

एपोफिस धरती के करीब से गुजरेगा लेकिन अपनी निकटता के बावजूद इससे पृथ्वी को कोई खतरा नहीं है। 2004 में इसकी खोज के बाद इसे खतरनाक क्षुद्रग्रह के रूप में पहचाना गया लेकिन 2029 में इसके प्रभाव से किसी भी जोखिम को खारिज किया गया है। इसके धरती से टकराने का कोई अंदेशा नहीं है लेकिन एपोफिस क्षुद्रग्रह अगर पृथ्वी से टकराता है तो इससे बहुत गंभीर विनाश होगा। एपोफिस से होने वाली तबाही प्रभाव स्थल से कई सौ किलोमीटर तक फैल जाएगी। प्लेनेटरी सोसाइटी का मानना है कि इससे 1,000 मेगा टन टीएनटी से अधिक उर्जा पैदा होगी, जो सैकड़ों परमाणु हथियारों के बराबर है।

नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियां कर रही काम

एपोफिस के आकार की बात की जाए को ये करीब एक चौथाई मील लंबा है, जो पांच फुटबॉल मैदानों के बराबर है। रडार डेटा से पता चलता है कि क्षुद्रग्रह की बनावट कुछ हद तक मूंगफली जैसा है। यह मुख्य रूप से पत्थरीले सिलिकेट पदार्थों और धातु निकल और लोहे के मिश्रण से बना है। नासा की एक टीम एपोफिस पर नजर बनाए हुए है। ये टीम इस क्षुद्रग्रह के प्रभाव का विश्लेषण करेगी। नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियां सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। नासा एक सर्वेयर टेलीस्कोप भी बना रहा है, जिसे जून 2028 में लॉन्च किया जाना है। यह टेलीस्कोप 460 फीट से बड़ी पृथ्वी के निकट की वस्तुओं की खोज करेगा, जिसका लक्ष्य पृथ्वी की कक्षा के 30 मिलियन मील के भीतर ऐसी 90 प्रतिशत वस्तुओं की खोज करना है।

एपोफिस का नाम राक्षस सर्प के नाम पर रखा

बता दे कि एपोसिस जून 2028 में लॉन्च हो सकता है। वही एपोफिस प्रारंभिक सौर मंडल का अवशेष है, जो 4.6 बिलियन साल पहले मंगल और बृहस्पति के बीच क्षुद्रग्रह बेल्ट में बना था। यह बृहस्पति जैसे बड़े ग्रहों के गुरुत्वाकर्षण बलों से प्रभावित हुआ है। इसका नाम अव्यवस्था और अराजकता के प्राचीन मिस्र के देवता से लिया गया है, जो इस तरह के क्षुद्रग्रह की वजह से संभावित तबाही को दर्शाता है। एपोफिस का नाम राक्षस सर्प के नाम पर रखा गया है, जो बुराई और अराजकता का प्रतीक है।

खबर संक्षेप

रूस की राजधानी मॉस्को पर यूक्रेन का बड़ा हमला

कीव। रूस और यूक्रेन का युद्ध अपने चरम सीमा पर पहुंच चुका है। यूक्रेनी सेना रूस के कई इलाकों पर कब्जा भी कर चुकी है। यूक्रेन ने रूस की राजधानी मॉस्को पर अब तक का सबसे बड़ा 10 ड्रोन से हमला किया है। यूक्रेन की तरफ से बुधवार को मॉस्को पर कई ड्रोन दागे गए। हालांकि, रूस की सेना ने उन्हें मार गिराया। रूसी सेना ने बताया कि यूक्रेन के 11 ड्रोन सेना ने मार गिराए। अधिकारियों ने कहा कि यह फरवरी 2022 में यूक्रेन में युद्ध शुरू होने के बाद से राजधानी पर सबसे बड़े ड्रोन हमलों में से एक था। कुछ ड्रोन पोडोल्स्क शहर के ऊपर नष्ट कर दिए गए।

तीर्थयात्रियों को ले जा रही बस पलटी, 35 की मौत

तेहरान। ईरान के यज़्द में एक चेकपोस्ट पर बस पलटने से 35 पाकिस्तानी तीर्थयात्रियों की मौत हो गई है और 18 लोग घायल हो गए हैं। दुर्घटना मंगलवार देर रात मध्य ईरानी प्रांत यज़्द में हुई। तीर्थयात्री अरबईन की याद में इराक जा रहे थे, जो 7वीं शताब्दी में एक शिया मौलवी की मृत्यु के 40वें दिन मनाया जाता है। दुर्घटना में मरने वालों की संख्या 28 है और घायलों के इलाज के लिए शहर भर के अस्पतालों में आपातकाल लगा दिया गया है।

समझौते से आत्मनिर्भरता तथा 'मेक इन इंडिया' को भी बढ़ावा मिलेगा

रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए नौसेना का बीईएमएल के साथ समझौता

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

इस साझेदारी का उद्देश्य रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाना और विदेशी आयात पर निर्भरता कम करना है, यह रणनीतिक गठबंधन तत्काल परिचालन जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ दीर्घकालिक रक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर केंद्रित है।

रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए 20 अगस्त को भारतीय नौसेना ने रक्षा और भारी इंजीनियरिंग क्षेत्र की अग्रणी निर्माता कंपनी बीईएमएल लिमिटेड साथ एक समझौते (ओएमयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

बता दे कि नौसेना के मुख्यालय में इस समझौते पर भारतीय नौसेना के रियर एडमिरल के. श्रीनिवास और बीईएमएल के रक्षा निदेशक अजीत कुमार श्रीवास्तव ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत महत्वपूर्ण समुद्री रक्षा उपकरणों का स्वदेशीकरण किया जाएगा जिससे विदेशी रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भरता कम होने की उम्मीद जताई जा रही है। यह साझेदारी महत्वपूर्ण समुद्री इंजीनियरिंग उपकरणों और प्रणालियों के स्वदेशी डिजाइन, विकास, निर्माण, परीक्षण और रक्षा उत्पादों को बढ़ाएगी, इसके साथ ही सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' पहल की कड़ी में यह सहयोग रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता तथा 'मेक इन इंडिया' को भी बढ़ावा देगा।

खास बातें

- समझौते से विदेशी रक्षा उपकरणों के आयात पर कम होगी निर्भरता
- दोनों नौसेना परियोजनाएं अत्याधुनिक, घरेलू स्तर पर उत्पादित प्रौद्योगिकी से सुसज्जित होंगी

इस सहयोग से क्षमताओं में वृद्धि होगी

कंपनी के अनुसार, इस साझेदारी का उद्देश्य रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाना और विदेशी आयात पर निर्भरता कम करना है। बीईएमएल ने कहा कि इस सहयोग से स्वदेशी समुद्री इंजीनियरिंग क्षमताओं में वृद्धि होगी, तथा यह सुनिश्चित होगा कि वर्तमान और भविष्य की दोनों नौसेना परियोजनाएं अत्याधुनिक, घरेलू स्तर पर उत्पादित प्रौद्योगिकी से सुसज्जित होंगी। बयान में कहा गया कि यह गठबंधन तात्कालिक परिचालन आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ दीर्घकालिक रक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर केंद्रित है।

एक नजर डिजाइन और निर्माण योजना पर

स्वदेशी डिजाइन और विकास: बीईएमएल कार्यक्रम और उसके घटकों के लिए विस्तृत डिजाइन और निर्माण योजना बनाता है और सहमत कार्यक्रम के अनुसार समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करता है।

विनिर्माण उत्कृष्टता: बीईएमएल अपनी उन्नत इंजीनियरिंग और विनिर्माण क्षमताओं का उपयोग करके कार्यक्रम के उपकरण निर्माण प्रयासों का नेतृत्व करेगा।

व्यापक परीक्षण और परीक्षण: बीईएमएल भारतीय नौसेना के कड़े मानकों को पूरा करने के लिए विकसित प्रणालियों का कठोर परीक्षण और परीक्षण करेगा।

स्थापना और कमीशनिंग: बीईएमएल नौसेना के जहाजों पर उपकरणों की स्थापना और कमीशनिंग की देखरेख करेगा और पूरी प्रक्रिया में पूर्ण सहायता प्रदान करेगा।

रक्षा सहयोग की मजबूती को लेकर होगी चर्चा

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का अमेरिका दौरा कल से

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 23 अगस्त को अमेरिका जाएंगे। वह अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड आस्टिन के निमंत्रण पर 26 अगस्त तक वहां रहेंगे। इस दौरान वह अमेरिकी रक्षा सचिव के साथ बैठक करेंगे। इसमें रक्षा सहयोग की मजबूती को लेकर चर्चा होगी। इसके अलावा रक्षा मंत्री अमेरिकी राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों के सहायक जेक सुलविन से मुलाकात करेंगे।

पीएम मोदी की न्यूयॉर्क यात्रा से पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का अमेरिका दौरा काफी अहम माना जा रहा है। इससे अमेरिका-भारत संबंधों को नई गति मिलेगी। साथ ही रक्षा क्षेत्र में कई सहयोगों में मजबूत आएगी। इसके अलावा अमेरिका दौरे से दोनों देशों के बीच वैश्विक रणनीतिक साझेदारी के व्यापक होने की उम्मीद है। रक्षा मंत्री अमेरिका की रक्षा उद्योग के साथ गोलमेज बैठक भी करेंगे। इसमें रक्षा उद्योग के साथ चल रहे कामों और भविष्य के रक्षा समझौतों पर चर्चा की जाएगी। यात्रा के दौरान वह भारतीय समुदाय से भी बातचीत करेंगे।

सूत्रों का कहना है कि अपने इस दौरे में रक्षा मंत्री अमेरिकी फर्म जनरल इलेक्ट्रिक की तरफ से हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को जीई-एफ404 टर्बोफैन इंजन की आपूर्ति में हो रही देरी के मुद्दे को अमेरिकी अधिकारियों के समक्ष उठाएंगे। भारतीय वायुसेना को तेजस एमके1ए की डिलीवरी इंजनों की सप्लाई में देरी के चलते लटक रही है। भारतीय वायु सेना को 31 मार्च 2024 तक पहले तेजस एमके1ए की डिलीवरी होनी थी, लेकिन इसमें लगभग 10 महीने की देरी हो रही है।

सुरक्षा को बढ़ावा देंगे भारत-अमेरिका

रक्षा सूत्रों ने बताया कि भारत तेजस मार्क-2 वर्जन लाने की भी तैयारी कर रहा है। इसमें भी जीई एफ 414 जेट इंजन लगाया जाना है। भारत की कोशिश रहेगी कि भारत-अमेरिका मिल कर इस इंजन का संयुक्त उत्पादन करें। राजनाथ सिंह रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन के साथ इस मामले पर चर्चा करेंगे, ताकि इंजन की सप्लाई में तेजी लाई जा सके। इस दौरे में उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग को बढ़ाने पर चर्चा होगी। दोनों देश जेवलिन एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल और स्ट्राइकर आर्मर्ड व्हीकल जैसे प्रमुख रक्षा प्लेटफार्मों के सह-उत्पादन को लेकर भी बात होगी।

तकनीकी खराबी के कारण पोखरण में एयर स्टोर छोड़ा

फाइटर जेट ने छोड़ा एयर स्टोर आठ फीट गहरा गड्ढा हुआ

एजेंसी ▶▶ पोखरण

भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के एक लड़ाकू विमान ने बुधवार को एक प्रशिक्षण मिशन के दौरान तकनीकी खराबी के कारण गलती से एयर स्टोर छोड़ दिया। अधिकारियों ने बताया कि यह घटना राजस्थान के पोखरण के आसपास हुई। गनीमत ये रही कि जमीन पर 8 फीट गहरा गड्ढा हो गया है। कोई हताहत या क्षति की सूचना नहीं मिली।

आईएएफ ने दिए गए जांच के आदेश

बता दे कि जिस जगह ये एयर स्टोर गिरा वहां, जमीन में करीब 8 फीट गहरा गड्ढा हो गया। भारतीय वायुसेना ने उस तकनीकी समस्या का कारण निर्धारित करने के लिए जांच शुरू कर दी है जिसके कारण ये घटना हुई। भारतीय वायु सेना ने एक एक्स पोस्ट में कहा, 'तकनीकी खराबी के कारण आज पोखरण फायरिंग रेंज क्षेत्र के पास भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के लड़ाकू विमान का एक एयर स्टोर अनजाने में रिलीज हो गया। आईएएफ द्वारा जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

यह 2022 की घटना की तरह ही है

पोखरण फायरिंग रेंज की हालिया घटना मार्च 2022 की एक अधिक गंभीर घटना की तरह ही है। उस दौरान एक ब्रह्मोस मिसाइल गलती से भारत से पाकिस्तान में दागी गई थी। 9 मार्च, 2022 को ये मिसाइल पाकिस्तान के पंजाब के खानेवाल जिले में मियां चन्नू में दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी।

दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर चर्चा हुई

सीतारमण ने बुर्किना फासो के वित्त मंत्री नाकानाबो से की मुलाकात

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 20, अगस्त को नई दिल्ली में बुर्किना फासो के अर्थव्यवस्था और वित्त मंत्री अबूबकर नाकानाबो से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं के बीच कई अहम मुद्दों पर बातचीत की। वित्त मंत्रालय ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल 'एक्स' पोस्ट पर जारी एक बयान में बताया कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने समकक्ष मंत्री बुर्किना फासो के अर्थव्यवस्था और वित्त मंत्री अबूबकर नाकानाबो से मुलाकात

की। इस मुलाकात के दौरान दोनों मंत्रियों ने आपसी हितों के विभिन्न द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर बातचीत की। इसके अलावा दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर चर्चा हुई। उल्लेखनीय है कि बुर्किना फासो के अर्थव्यवस्था और वित्त मंत्री अबूबकर नाकानाबो भारत के दौरे पर हैं।

ऑफर लेटर से खुलासा, 1600 किमी की दूरी तय करेंगे

हर रोज जेट विमान से दफ्तर आएंगे जाएंगे स्टारबक्स के नए सीईओ

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

स्टारबक्स के नए सीईओ ब्रायन निकोल जो अगले महीने अपना पदभार संभालने वाले हैं रोजाना दफ्तर पहुंचने के लिए एक लंबा सफर तय करेंगे। कैलिफोर्निया में रहने वाले निकोल सिएटल में कंपनी के मुख्यालय तक पहुंचने के लिए हर दिन 1,600 किलोमीटर की दूरी कॉरपोरेट जेट से तय करेंगे। उनके ऑफर लेटर में इसका जिक्र किया गया है। ऑफर लेटर के अनुसार निकोल से सप्ताह में कम से कम तीन दिन सिएटल कार्यालय से काम करने की अपेक्षा की जाएगी। उन्हें यह सुविधा स्टारबक्स की हाइब्रिड कार्य नीति के अनुसार दी गई है, जो 2023 से लागू है।

सालाना 1.6 मिलियन डॉलर का मूल वेतन

50 वर्षीय निकोल को हर वर्ष 1.6 मिलियन डॉलर का मूल वेतन दिया जाएगा इसके अलावा उनके प्रदर्शन के आधार पर उन्हें 3.6 मिलियन डॉलर से 7.2 मिलियन डॉलर तक का नकद बोनस भी मिल सकता है। वे 23 मिलियन डॉलर तक की वार्षिक इक्विटी हासिल करने के भी पात्र होंगे। यह पहली बार नहीं है जब निकोल इस तरह की लंबी दूरी तय कर दफ्तर पहुंचेंगे। 2018 में जब वे विपोटल के सीईओ थे, तब भी उन्होंने बातचीत से इसी तरह की सुविधा सफलतापूर्वक हासिल की थी। विपोटल का मुख्यालय कोलोराडो में था, जो निकोल के अंतिम कार्यस्थल से 15 मिनट की ड्राइव जितनी दूर था।

सेना का तलाशी अभियान जारी

राजौरी में सुरक्षाबलों को मिला आतंकी ठिकाना, किया ध्वस्त

एजेंसी ▶▶ जम्मू

राजौरी के सगरावत में सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षाबलों को आतंकियों के भूमिगत ठिकाने का पता चला है। एक विशेष सूचना के आधार पर, दरहाल पुलिस स्टेशन की पुलिस, एसओजी, सेना की राष्ट्रीय राइफल्स और सीआरपीएफ की एक टीम ने राजौरी के दरहाल में सगरावत जंगल के इलाकों में एक संयुक्त घेरा और तलाशी अभियान (सीएएसओ) शुरू किया।

आतंकियों के विधानसभा चुनाव को बाधित करने के हर षड्यंत्र को सुरक्षाबल नाकाम कर

रहे हैं। राजौरी जिले की दरहाल तहसील के सगरावत जंगल में मंगलवार को सुरक्षाबलों ने आतंकी ठिकाने को ध्वस्त किया। बता दे कि आतंकी ठिकानें में हथियार एवं खाने की सामग्री मिली थी जिसे जब्त कर लिया है हालाकि आतंकियों का कोई सुराग तो नहीं मिला, लेकिन जंगल से सटे आबादी वाले इलाकों पर नजर रखनी शुरू कर दी है। जंगल में सुरक्षाबलों की गश्त जारी है।

होटलों में खाली पड़े हैं कमरे, नहीं आ रहे विमान, व्यापारी हो रहे परेशान

हिंसा के बाद बांग्लादेश के पर्यटन उद्योग को बड़ा नुकसान, नहीं आ रहे मेहमान

एजेंसी ▶▶ ढाका

बांग्लादेश में सरकार विरोधी प्रदर्शनों के बाद हुई हिंसा से देश के पर्यटन उद्योग को बड़ा नुकसान हुआ है। पिछले एक महीने से मेहमान न आने के चलते होटलों में कमरे खाली पड़े हैं। पर्यटन उद्योग से जुड़े कर्मचारियों का बुरा हाल है। ढाका में सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय होटल हैं। देश की राजधानी होने के चलते यहां व्यापार और पर्यटन के लिए मेहमान आते रहते हैं। मगर हिंसा के चलते बीते एक महीने से देश का पर्यटन उद्योग बड़ा नुकसान झेल रहा है। होटल के वरिष्ठ अधिकारियों के मुताबिक सबसे ज्यादा स्थिति जुलाई से खराब होनी शुरू हुई। जब लगातार बुकिंग रद्द होने लगीं। एक पांच सितारा होटल के प्रबंधक ने बताया कि जुलाई में बड़े पैमाने पर बुकिंग रद्द हुईं। इससे 1.2-1.3 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। अगस्त के पहले सप्ताह में ही 35 लाख का नुकसान हुआ। उन्होंने बताया कि जब राजधानी में स्थिति बिगड़ने लगी तो हमने महिला स्टाफ को होटल आने से मना कर दिया था। जबकि पुरुष स्टाफ के होटल में ही रुकने की व्यवस्था की गई। जब हसीना सरकार गिरी उस दिन होटल में जर्मनी, रूसी, स्विट्जरलैंड, भारत समेत बांग्लादेश के मेहमान रुके थे।

ढाका में सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय होटल हैं। देश की राजधानी होने के चलते यहां व्यापार और पर्यटन के लिए मेहमान आते रहते हैं। मगर हिंसा के चलते बीते एक महीने से देश का पर्यटन उद्योग बड़ा नुकसान झेल रहा है।

पिछले माह बड़ी संख्या में कमरों की बुकिंग रद्द हुई

व्यापारी ने बताया कि हमने होटल को सील किया और किसी को भी अंदर या बाहर आने की अनुमति नहीं दी। प्रदर्शनकारियों ने हमारे होटल के सामने मार्च किया, लेकिन हमारी संपत्ति को कोई नुकसान नहीं हुआ। एक अन्य होटल के स्टाफ ने बताया कि देश में हिंसा के चलते पर्यटन और होटल उद्योग की स्थिति बेहतर नहीं है। अब तक उनकी कंपनी को तीन से चार करोड़ तक का नुकसान हो चुका है। पिछले महीने हमारे होटल में बड़ी संख्या में डीलक्स कमरों की बुकिंग रद्द हुई।

धीरे-धीरे हालात सामान्य हो रहे

एक अन्य होटल के प्रबंधक ने कहा कि हमारे होटल में 71 कमरे हैं, लेकिन मेहमान नहीं आ रहे हैं। उम्मीद है कि जल्द स्थिति सुधरेगी। हालांकि कुछ होटल प्रबंधकों का कहना है कि हालात अब सामान्य हो रहे हैं। व्यापार की दृष्टि से मेहमान आने लगे हैं। लेकिन अधिकांश होटलों में कमरे खाली ही हैं। शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर देश छोड़ दिया था। प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा में सैकड़ों लोगों की मौत हो गई। इसके बाद मोहम्मद युनूस ने अंतरिम सरकार के प्रमुख के तौर पर शपथ ली।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक राजेश मीणा द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी एल टॉवर, 3-ए, विद्याआश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं बी-66, कुसुम विहार, जगतपुरा, मालवीया नगर, जयपुर से प्रकाशित।
सम्पादक-राजेश मीणा, Email : sanjeevnitoday@gmail.com मो: 8094811115, (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)